بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक
बदर
क़ादियान
Weekly Badar Qadian
HINDI

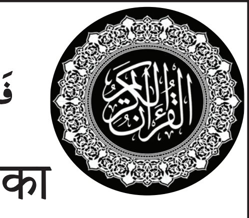

अल्लाह तआला का आदेश

فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّکَ وَکُنۡ مِّنَ السّٰجِدِیۡنَ ﴿۹۹﴾ وَاعۡبُدۡ رَبَّکَ حَتّٰی یَاۡتِیَکَ الۡیَقِیۡنُ ﴿۱۰۰﴾ (الحجر :100-99)

अनुवाद: फिर अपने रब की प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन करो और सज्दा करने वालों में से हो जाओ। और अपने रब की इबादत करते चले जाओ, यहाँ तक कि तुम्हें यक़ीन आ जाए।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद | वर्ष- 11 | अंक -37-38 | 27 रबीउल अव्वल 1448 हिज्री कमरी, 10 तबूक 1405 हिज्री शम्सी, 10-17 सितमबर 2026 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मुजाहिद वह है जो अपने नफ़्स (स्वयं की बुरी इच्छाओं) से संघर्ष करे।

فَضَالَةَ بْنَ عُبَيْدٍ يُحَدِّثُ، عَنْ رَسُولِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: " كُلُّ مَيِّتٍ يُخْتَمُ عَلَى عَمَلِهِ إِلَّا الَّذِي مَاتَ مُرَابِطًا فِي سَبِيلِ اللّٰہِ، فَإِنَّهُ يُنْمَى لَهُ عَمَلُهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، وَيَأْمَنُ مِنْ فِتْنَةِ الْقَبْرِ "، وَسَمِعْتُ رَسُولَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: " الْمُجَاهِدُ مَنْ جَاهَدَ نَفْسَهُ ۔ [سنن ترمذی/ کتاب فضائل الجهاد عن رسول الله صلى الله عليه وسلم/ حدیث: ۱۶۲۱]

हज़रत फ़ज़ालह बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"हर मृत व्यक्ति के कर्मों का सिलसिला बंद कर दिया जाता है, सिवाय उस व्यक्ति के जो अल्लाह की राह में सीमा की रक्षा करते हुए मृत्यु पाए। उसके कर्मों का सवाब क़यामत के दिन तक बढ़ाया जाता रहेगा और वह क़ब्र की परीक्षा (फ़ितना) से सुरक्षित रहेगा।" मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह भी फ़रमाते हुए सुना: "मुजाहिद वह है जो अपने नफ़्स (अपनी बुरी इच्छाओं और वासनाओं) के विरुद्ध संघर्ष करे।"

عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰہُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ رَجَعَ مِنْ بَعْضِ غَزَوَاتِهِ فَقَالَ رَجَعْنَا مِنَ الْجِهَادِ الْأَصْغَرِ إِلَى الْجِهَادِ الْأَكْبَرِ قِيلَ يَا رَسُولَ اللّٰہِ وَمَا الْجِهَادُ الْأَكْبَرُ قَالَ وَهِيَ مُجَاهَدَةُ النَّفْسِ -(رد المختار علی الدر المختار ج ۳ ص ۲۳۵)

एक बार सैयदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब एक युद्ध से वापस लौट रहे थे, तो आपने फ़रमाया: "हम छोटे जिहाद, अर्थात युद्ध, से लौट रहे हैं और अब सबसे बड़े जिहाद (जिहाद-ए-कबीर), यानी अपने नफ़्स (स्वयं की बुरी इच्छाओं) के विरुद्ध संघर्ष की ओर जा रहे हैं।"

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

जिस कदर अमल की कमजोरी और तक़वा की कमजोरी के रोग देखे जाते हैं, उन सबकी असल जड़ मारिफ़त की कमजोरी है

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि: "ईमान को मज़बूत करने की बहुत ज़रूरत है। बिना ईमान के अमल मुर्दे की तरह होते हैं। ईमान हो तो इंसान को वह मारिफ़त हासिल होती है, जिससे वह आसमान की ओर ऊपर उठता है और अगर यह न हो तो न बरकतें हासिल होती हैं और न खुशी हासिल होती है। ख़ुदा को देखने के बाद जब कोई अमल किया जाए तो उस अमल की जो शान होगी, क्या वैसी किसी दूसरे के अमल की हो सकती है? हरगिज़ नहीं। जिस कदर अमल की कमजोरी और तक़वा की कमजोरी के रोग देखे जाते हैं, उन सबकी असल जड़ मारिफ़त की कमजोरी है। एक कीड़े की भी मारिफ़त होती है तो इंसान उससे डरता है, फिर अगर ख़ुदा की मारिफ़त हो तो उससे क्यों न डरे? मतलब यह कि मारिफ़त की बहुत ज़रूरत है।

मैं देखता हूँ कि यद्यपि हमारी जमाअत तो बढ़ रही है, लेकिन अभी केवल बाहरी हिस्सा ही बढ़ रहा है। अगर अंदर का सार बढ़े तो बात है। बार-बार ख़याल आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क्या ही पवित्र शक्ति है कि आप पर ईमान लाकर सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने एक ही बार में दुनिया का फ़ैसला कर दिया। जान से बढ़कर क्या चीज़ होती है? अपने ख़ून से दीन पर मुहरें लगा दीं। अब लोग बैअत करते हैं तो देखा जाता है कि साथ ही दुनिया के छिपे हुए मकसद भी लेकर आते हैं कि फलाँ काम दुनिया का हो जाए, यह हो जाए। यह सच है कि जो मोमिन हो जाता है तो ख़ुदा तआला उसकी हर मुश्किल को आसान कर देता है, लेकिन सबसे पहले मारिफ़त ज़रूरी है। फिर ख़ुदा तआला ख़ुद उसकी हर एक ज़रूरत का ज़िम्मेदार होगा।" (मलफ़ूज़ात, जिल्द पंचम, पृष्ठ संख्या 222 से 223)

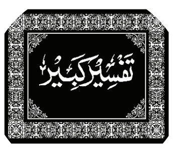

यक़ीन के प्रसिद्ध और वास्तविक अर्थ क्या हैं

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः अल-हिज्र की आयत وَاعۡبُدۡ رَبَّکَ حَتّٰی یَاۡتِیَکَ الۡیَقِیۡنُ की तफ़सीर में बयान फ़रमाते हैं:

"यक़ीन के अर्थ इस जगह पर मौत के हैं। फ़रमाता है कि अब तू मौत तक हमारी इबादत में लगा रह, यानी इस्लाम को जो तरक़्क़ी मिलेगी, उसमें अब कोई रुकावट नहीं पड़ेगी। और तू आराम से अपनी मौत तक खुले तौर पर अल्लाह तआला की इबादत कर सकेगा और ये लोग इस समय जो तेरी इबादत में रुकावटें डालते हैं, उनको ख़ुदा तआला इस तरह मिटा देगा कि तेरी सारी ज़िंदगी इबादत की आज़ादी के लिहाज़ से आराम में गुज़रेगी।

यक़ीन के प्रसिद्ध अर्थ भी इस जगह हो सकते हैं और इस सूरत में ये अर्थ होंगे कि जिस घड़ी का वादा है, उसके आने तक ख़ास तौर पर इबादत में लगे रहो। मानो अज़ाब या उस घड़ी के निशान ज़ाहिर होने का नाम यक़ीन रखा गया है, क्योंकि जब तक वादा पूरा न हो, उसकी पूरी हक़ीक़त ज़ाहिर नहीं होती। इसलिए फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला की तरफ़ से वादा हो तो ख़ास तौर पर दुआ और इबादत में लग जाना चाहिए, ताकि वह वादा हर तरह की भलाई के साथ पूरा हो।

इसके ये अर्थ नहीं कि दूसरे दिनों में इबादत छोड़ सकता है। क्योंकि जब यह आयत उतरी, उस समय भी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इबादत करते थे। इसलिए इसके अर्थ सामान्य से अधिक इबादत और ध्यान देने के हैं।कुछ नादान बिदअती इस आयत के ये अर्थ करते हैं कि जब तक यक़ीन हासिल न हो, इबादत फ़र्ज़ है और जब यक़ीन हासिल हो जाए तो फिर नहीं। क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है, 'यक़ीन के हासिल होने तक इबादत कर।' ये नादान नहीं जानते कि इस तरह वे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला करते हैं और मानो यह कहते हैं कि इस सूरत के उतरने तक आपको पूरा यक़ीन हासिल नहीं हुआ था। अगर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबुवत के बाद यक़ीन हासिल नहीं हुआ था तो इन ज़लील लोगों को यक़ीन किस तरह हासिल हो सकता है? نَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنۡ هٰذِهِ الۡخُرَافَاتِ।(हम इन झूठी और बेबुनियाद बातों से अल्लाह की पनाह माँगते हैं।)एक बार मेरे पास ऐसा ही एक व्यक्ति आया और उसने सवाल किया कि नाव पर सवार व्यक्ति जब किनारे पर पहुँच जाए तो नाव में ही बैठा रहे या उतर आए। मैंने कहा कि अगर दरिया सीमित है और उसका किनारा है तो किनारे पर उतर आए, लेकिन अगर दरिया बेकिनारा है तो जिसे वह किनारा समझता है, वह उसकी अक़्ल का धोखा है। इसलिए वह जहाँ उतरेगा, वहीं डूबेगा। इस पर वह बहुत शर्मिंदा हुआ।" (तफ़सीर-ए-कबीर, जिल्द नंबर 5, पृष्ठ नंबर 375)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़्ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी ऊँची शान और सर्वोच्च स्थान का वर्णन
(हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के 10 दिसंबर 2004 के ख़ुत्बा-ए-जुमा से)

قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ وَیَغۡفِرۡ لَکُمۡ ذُنُوۡبَکُمۡ ؕ وَاللّٰہُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ (آل عمران:۳۲)

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا (الاحزاب:۵۷)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी ऊँची शान और सर्वोच्च स्थान का वर्णन

(हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के 10 दिसंबर 2004 के ख़ुत्बा-ए-जुमा से)

"तुम कह दो कि यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला, बार-बार दया करने वाला है।"

"निश्चय ही अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम भी उस पर दुरूद और ख़ूब-ख़ूब सलाम भेजो।"

ये दो आयतें हैं। एक आल-ए-इमरान की है और दूसरी सूरह अहज़ाब की। जैसा कि अनुवाद से आपने सुन लिया, आल-ए-इमरान की इस आयत में अल्लाह तआला ने हमें, बल्कि पूरी दुनिया के इंसानों कोआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके माध्यम से यह संदेश पहुँचा दिया है कि अब पिछले और आने वाले सभी नमूने समाप्त हो गए हैं। अब यदि कोई अनुसरण करने के योग्य आदर्श है तो वहआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमका आदर्श है।

और इस आदर्श का अनुसरण किस प्रकार स्थापित होगा? इस तरह स्थापित होगा जैसे एक सच्चा प्रेमी अपने प्रिय की पसंद और नापसंद को अपनी पसंद और नापसंद बना लेता है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब तुम इस प्रकारआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी पैरवी करोगे, तभी मैं तुम्हारे गुनाह भी क्षमा करूँगा और तुमसे प्रेम का व्यवहार भी करूँगा। तुम्हारी धार्मिक और सांसारिक भलाई के साधन भी पैदा करूँगा।

तो मानो अब अल्लाह तआला तक पहुँचने के सभी रास्ते बंद हो गए हैं और यदि कोई रास्ता खुला है तो वहआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी पूर्ण आज्ञापालन और पैरवी करके, आपके पीछे चलकर ही अल्लाह तआला तक पहुँचने का रास्ता है। यही एक रास्ता खुला है।

फिर इस उसवए हसनह अर्थात उत्तम आदर्श का अनुसरण करने और आपकेसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी मुहब्बत दिल में बढ़ाने का तरीका अगली आयत, जो मैंने तिलावत की है, सूरह अहज़ाब में बताया गया है। और वह यह है कि यह नबी कोई साधारण नबी नहीं है। यह तो अल्लाह तआला का सबसे प्यारा अस्तित्व है। धरती और आकाश इसी के लिए पैदा किए गए हैं।

अल्लाह तआला भी इस पर रहमत भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी इसी काम पर लगे हुए हैं कि अल्लाह के इस प्यारे नबी पर रहमत भेजते रहें और दुआएँ करते रहें।

इसलिए, हे लोगो! जो ईमान का दावा करते हुए अल्लाह तआला की मुहब्बत चाहते हो, तुम्हारा भी यह काम है कि इस नबी से मुहब्बत पैदा करो। उस पर दुरूद भेजो और बहुत अधिक सलामती भेजो।

जब तुम इस प्रकार इस नबी पर दुरूद और सलाम भेजोगे तो तुम्हारे लिए उसकी पैरवी के रास्ते भी खुलते चले जाएँगे। और जैसे-जैसे ये रास्ते खुलेंगे और जिस प्रकार तुम उसकी पैरवी करते चले जाओगे, उतनी ही अधिक तुम अल्लाह तआला की मुहब्बत प्राप्त करने वाले भी बनते चले जाओगे।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम इस विषय में फ़रमाते हैं कि:

"दुआ की क़बूलियत के तीन ही माध्यम हैं। प्रथम قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ (आल-ए-इमरान: 32)। द्वितीय یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا (अल-अहज़ाब: 57)। और तीसरा मोहेबत-ए-इलाही।"

(हज़रत अक़दस की एक तक़रीर और मसअला वहदतुल वजूद पर एक ख़त, पृष्ठ 23)।

अर्थात यदि तुम चाहते हो कि दुआएँ क़बूल हों तो जिस धर्म को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेकर आए हैं, उसकी पैरवी करो, आपसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमसे मुहब्बत करो और अल्लाह तआला की मुहब्बत प्राप्त करो।

फिर रसूलुल्लाहसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमपर दुरूद भेजो ताकि इस मुहब्बत में स्वयं भी बढ़ो और इसी कारण अल्लाह तआला की मुहब्बत भी प्राप्त करो।

और फिर यह कि अल्लाह तआला के सामने झुको, उससे क्षमा माँगो, उसकी इबादत करो और सभी गैर-अल्लाह को छोड़ दो।

तो ये तीन चीज़ें हैं। यदि ये पैदा हो जाएँगी तो समझो कि तुम अल्लाह तआला का क़ुर्ब पाने वाले हो जाओगे और दुनिया तथा आख़िरत सँवर जाएगी।

फिर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आगे फ़रमाते हैं कि:

"इनको कह दो इस बारे में कि यदि तुम चाहते हो कि महबूब-ए-इलाही बन जाओ और तुम्हारे गुनाह क्षमा कर दिए जाएँ तो इसकी एक ही राह है कि मेरी आज्ञा का पालन करो।"

फ़रमाया कि:"......मेरी पैरवी एक ऐसी चीज़ है जो रहमत-ए-इलाही से निराश होने नहीं देती। गुनाहों की मग़फ़िरत का कारण होती है और अल्लाह तआला का महबूब बना देती है।"

अर्थात जो वास्तविक रूप से पैरवी करने वाले होते हैं, वे कभी अल्लाह तआला की रहमत से निराश नहीं होते। उनमें एक विश्वास की स्थिति होती है कि इस पहलू से हमने निश्चित रूप से अल्लाह तआला का क़ुर्ब पा लेना है और उसकी मुहब्बत प्राप्त कर लेनी है।

तो फ़रमाया कि मेरी पैरवी गुनाहों की मग़फ़िरत का कारण होती है और अल्लाह तआला का महबूब बना देती है।

"और तुम्हारा यह दावा कि हम अल्लाह तआला से मुहब्बत करते हैं, इसी स्थिति में सच्चा और सही साबित होगा कि तुम मेरी पैरवी करो।"

...फिर आप फ़रमाते हैं कि: "दुनिया में करोड़ों ऐसे पवित्र स्वभाव वाले लोग गुज़रे हैं और आगे भी होंगे। लेकिन हमने सबसे बेहतर और सबसे उच्च तथा सबसे सुंदर उस ख़ुदा के बंदे को पाया है जिसका नाम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व आलिहि वसल्लम है।"

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا (الاحزاب:57)۔

उन क़ौमों के बुज़ुर्गों का ज़िक्र तो जाने दो, जिनका हाल क़ुरआन शरीफ़ में विस्तार से बयान नहीं किया गया। हम केवल उन नबियों के बारे में अपनी राय प्रकट करते हैं, जिनका ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में है। जैसे हज़रत मूसा, हज़रत दाऊद, हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम और दूसरे नबी। इसलिए हम ख़ुदा की क़सम खाकर कहते हैं कि अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दुनिया में न आते और क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल न होता और वे बरकतें हम अपनी आँखों से न देखते, जो हमने देख ली हैं, तो उन सभी पिछले नबियों की सच्चाई हमारे लिए संदिग्ध रहती।"

अर्थात अगर क़ुरआन शरीफ़ की शिक्षा हमारे सामने न होती और जिस तरह क़ुरआन करीम ने हमें इन नबियों के बारे में बताया है, उसे हम अपनी आँखों से न देख लेते, तो सभी पिछले नबियों की जो सच्चाई है, वह इस तरह हमारे सामने स्पष्ट न होती, जिस तरह क़ुरआन करीम पढ़ने से हमारे सामने स्पष्ट हुई है।

फ़रमाया कि: "क्योंकि केवल क़िस्सों से कोई हक़ीक़त हासिल नहीं हो सकती और संभव है कि वे क़िस्से सही न हों। और संभव है कि वे सभी चमत्कार जो उनकी ओर मंसूब किए गए हैं, वे सब बढ़ा-चढ़ाकर बयान किए गए हों। क्योंकि अब उनका नाम-ओ-निशान नहीं, बल्कि उन पिछली किताबों से तो ख़ुदा का पता भी नहीं चलता। और निश्चित रूप से यह नहीं समझ सकते कि ख़ुदा भी इंसान से हमकलाम होता है।

लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रकट होने से ये सभी क़िस्से हक़ीक़त के रंग में आ गए। अब न हम क़ौल के रूप में, बल्कि हाल के रूप में इस बात को अच्छी तरह समझते हैं।"

अर्थात अब ये केवल सुनी-सुनाई बातें नहीं हैं, बल्कि अनुभव से ये बातें हमारे सामने स्पष्ट हो गई हैं।

"इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि मुक़ालमा-ए-इलाहिया क्या चीज़ होता है।"

ये केवल क़िस्से नहीं रह गए, बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र शक्ति से ही पता लग गया कि:

"अल्लाह तआला किस तरह हमकलाम होता है, किस तरह बात करता है, किस तरह सुनता है और किस तरह सुनाता है।"

शेष पृष्ठ 5 पर

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 जुलाई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

आपकी सामान्य आदत यह थी कि जो कुछ भी आप किसी को देते थे, वह दिखावे के लिए नहीं होता था, बल्कि केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने और उसकी सृष्टि पर दया करने के भाव से होता था

शेष भाग

पानी तो मिलता है, गंदे कपड़े पहनने की बजाय कपड़े धोओ और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो। साफ-सफाई जहाँ सफाई का पहलू दिखाती है, वहीं इसमें शुक्रगुजारी का भी पहलू है कि अल्लाह तआला का शुक्र भी अदा करना चाहिए। ऐसा हुलिया नहीं बनाना चाहिए कि लोग कहें कि यह कैसी हालत बना रखी है।

इसी तरह एक रिवायत है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि आपने फरमाया: जन्नत में वह व्यक्ति दाख़िल नहीं होगा जिसके दिल में ज़र्रे के बराबर भी घमंड है। एक आदमी ने कहा: इंसान पसंद करता है कि उसके कपड़े अच्छे हों और उसके जूते अच्छे हों। आपने फरमाया: अल्लाह तआला सुंदर है और सुंदरता को पसंद करता है। इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला भी सुंदर है और अल्लाह तआला सुंदरता को पसंद करता है। लेकिन घमंड यह है कि अपने आपको बड़ा समझने के कारण सच्ची बात को न मानना और लोगों को छोटा समझना।

[(सहीह मुस्लिम, अनुवादित, किताबुल-ईमान, बाब: घमंड की मनाही और उसका वर्णन, हदीस 123, जिल्द 1, पृष्ठ 83, प्रकाशित नूर फाउंडेशन)]

सच्ची बात से इनकार करना और लोगों से घृणा के साथ पेश आना भी घमंड है। या अच्छे कपड़े पहनकर फिर घमंड करना, तो वह घमंड होगा। लेकिन अच्छे कपड़े पहनकर अगर विनम्रता से दूसरों से मिलते हो और उनका हक अदा करते हो तो यह घमंड नहीं है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब भी कोई नया कपड़ा लेते तो उस कपड़े का नाम लेते, चाहे वह कमीज़ हो या पगड़ी, और दुआ करते कि:

ऐ अल्लाह! सारी प्रशंसा तेरे लिए है। तूने ही मुझे यह पहनाया है। मैं तुझसे इसकी भलाई माँगता हूँ और वह भलाई भी जिसके लिए यह बनाया गया है। और मैं इसके बुराई से पनाह माँगता हूँ और उस बुराई से भी जिसके लिए यह बनाया गया है।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल-लिबास, बाब: मा यक़ूलु इज़ा लबिस..., हदीस 4020)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अल्लाह तआला किसी बंदे को कोई नेमत दे और वह जान ले कि यह अल्लाह की ओर से है तो उसके लिए उस नेमत का शुक्र लिख दिया जाता है। और अल्लाह किसी गुनाह पर बंदे की शर्मिंदगी जान ले तो उसे माफ कर दिया जाता है, इससे पहले कि वह उससे माफी माँगे। और एक व्यक्ति एक दीनार से कपड़ा खरीदता है और उसे पहनता है और अल्लाह की प्रशंसा करता है तो वह कपड़ा उसके घुटनों तक भी नहीं पहुँचता कि उसे माफ कर दिया जाता है।

(किताबुश-शुक्र, इब्न अबी अद-दुनिया, पृष्ठ 20, मक्तबतुत-तुरास अल-इस्लामी, 1994 ई.)

शुक्रगुजारी करने वाले के साथ अल्लाह यह व्यवहार करता है।

सालिम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया कि उन्होंने कहा कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी जंग से लौटते तो जब आप किसी घाटी या ऊँचे मैदान में पहुँचते तो तीन बार अल्लाहु अकबर कहते और उसके बाद फरमाते:

ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू, लहुल-मुल्कु व लहुल-हम्दु व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर। आइबूना ताइबूना आबिदूना साजिदूना लिरब्बिना हामिदून। सदक़ल्लाहु वअदहू व नसरा अब्दहू व हज़मल-अहज़ाबा वहदहू।

अर्थात्: एक अल्लाह के सिवा और कोई उपास्य नहीं। उसका कोई साझी नहीं। सारी बादशाहत उसी की है और सारी प्रशंसा उसी के लिए है और वह हर चीज़ पर शक्ति रखता है। हम अपनी गलतियों को स्वीकार करते हुए यात्रा से लौट रहे हैं और स्वीकार करते हैं कि हम आगे गलतियाँ नहीं करेंगे। हम अपने रब की ही इबादत करने वाले हैं। अपने रब के ही सामने सिर झुकाने वाले हैं। अपने रब की ही प्रशंसा करने वाले हैं। अल्लाह तआला ने निश्चित रूप से अपना वादा सच्चा कर दिखाया और अपने बंदे की मदद की और सभी दलों को अकेले ही हरा दिया।

[(सहीह अल-बुखारी, किताबुल-जिहाद वस्सियर, बाब: ऊँची जगह पर पहुँचने पर तकबीर कहना, हदीस 2995, जिल्द 5, पृष्ठ 341-342, प्रकाशित नज़ारत इशाअत)]

जंग-ए-बद्र के दिन काफिरों के मारे गए लोगों को मैदान-ए-बद्र के गड्ढों और कुओं में डाल दिया गया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अबू जहल को अपमानित किया और उसे मार डाला और हमें उससे छुटकारा दिया। जब सभी मारे गए लोगों को कुएँ में डाल दिया गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके चारों ओर घूम रहे थे जबकि मारे गए लोग उस गड्ढे में थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु एक-एक व्यक्ति का नाम लेकर आपको बता रहे थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की प्रशंसा और शुक्र करते हुए फरमा रहे थे कि सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने मुझसे किया हुआ वादा पूरा कर दिया।

(किताबुल-मग़ाज़ी लिल-वाक़िदी, जिल्द 1, पृष्ठ 111-112, दारुल-अअलमी, बेरूत, 1989)

आपके जानी दुश्मन के अंजाम तक पहुँचने पर आपका रवैया यह नहीं था कि किसी प्रकार की ख़ुशी दिखाई जाए या उसका इज़्हार किया जाए, बल्कि आपने अल्लाह तआला के सामने सिर झुकाया और उसका शुक्र अदा किया। इस बारे में और भी रिवायतें हैं। चुनाँचे एक रिवायत में आता है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं जंग-ए-बद्र के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ और अर्ज किया: मैंने अबू जहल को मार दिया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: क्या? उस अल्लाह की कसम जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं। मैंने अर्ज किया कि हाँ! उस अल्लाह की कसम जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं, मैंने उसे मार दिया है। आपने यह बात तीन बार दोहराई और मुझसे पुष्टि की। फिर फरमाया कि अल्लाह सबसे बड़ा है। सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने अपना वादा सच्चा कर दिखाया, अपने बंदे की मदद की और अकेले ही सभी विरोधी दलों को हरा दिया। फिर आपने फरमाया: चलो मेरे साथ, मुझे उसकी लाश दिखाओ। अतः हम रवाना हुए। जब आपने उसे देखा तो फरमाया: यह इस उम्मत का फिरऔन है। एक और रिवायत में है कि जिस दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अबू जहल के सिर की खुशखबरी दी गई, आपने दो रकअत नमाज़ पढ़ी।

इसकी और अधिक जानकारी एक रिवायत में इस तरह बयान हुई है। अबू इसहाक बयान करते हैं कि जब बद्र के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अबू जहल के मारे जाने की खुशखबरी लाने वाला आया तो आपने उससे तीन बार उस अल्लाह की कसम लेकर पूछा जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं: क्या तुमने वास्तव में उसे मरा हुआ देखा है? उसने आपके सामने कसम खाई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सजदे में गिर पड़े। कुछ रिवायतों में है कि आपने एक से अधिक सजदे किए।

(दलाइलुन-नुबुव्वत लिल-बैहक़ी, जिल्द 3, पृष्ठ 89, बाब इजाबतुल्लाह अज़्ज़ व जल्ल..., दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत, 2002 ई.), (तारीख़ुल-ख़मीस, जिल्द 2, पृष्ठ 119, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 2009 ई.), (मुस्नद अल-इमाम अहमद बिन हंबल, मुस्नद अब्दुल्लाह बिन मसऊद, जिल्द 2, पृष्ठ 166, हदीस 4247, आलमुल-कुतुब, 1998 ई.), (सुनन इब्न माजा, किताब इक़ामतिस्सलात, बाब मा जाअ फ़िस्सलात..., हदीस 1391)

फतह मक्का के अवसर पर आपकी शुक्रगुजारी की रिवायतें भी मिलती हैं।

इस संबंध में हज़रत इब्न उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फतह मक्का के दिन काबा की सीढ़ी पर खड़े हुए। फिर आपने अल्लाह तआला की प्रशंसा की। उसकी तारीफ बयान की और फरमाया:

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी सदक़ा वअदहू व नसरा अब्दहू व हज़मल-अहज़ाबा वहदहू।

सारी प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने अपना वादा सच्चा कर दिखाया, अपने बंदे की मदद की और सभी लश्करों को अकेले ही हरा दिया।

(सुनन अन-नसाई, किताबुल-क़सामा, बाब ज़िक्रिल-इख़्तिलाफ़ अला ख़ालिद अल-ख़ज़्ज़ा, हदीस 4803)

बुखारी की एक रिवायत में है कि अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने बयान किया है कि हममें से किसी ने यह बयान नहीं किया कि उसने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चाश्त की नमाज़ पढ़ते देखा हो, सिवाय हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा के। चाश्त की नमाज़ के बारे में जो भी रिवायतें मिलती हैं उनमें कहते हैं कि हमें तो और कोई रिवायत नहीं मिली, सिवाय हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा की एक रिवायत

के कि आपने चाश्त की नमाज़ पढ़ी। वह रिवायत इस तरह है कि आप बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फतह मक्का के दिन उनके घर में तशरीफ लाए और आपने स्नान किया और आठ रकअत नमाज़ पढ़ी। वह कहती हैं कि मैंने इससे अधिक हल्की नमाज़ कभी नहीं देखी। बहुत हल्की नमाज़ थी, लेकिन आठ रकअत आपने पढ़ीं और आप पूरी तरह रुकू और सजदा करते थे।

[(सहीह अल-बुखारी, किताबुत-तहज्जुद, बाब: सफ़र में चाश्त की नमाज़, हदीस 1176)]

यह ऐसा नहीं था कि आपने जल्दी-जल्दी नमाज़ पढ़ ली। आपकी हल्की नमाज़ भी हमारी लंबी नमाज़ों जैसी ही थी।

एक सीरत लिखने वाले ने इस घटना को इस शीर्षक के तहत बयान किया है कि:

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आठ रकअत शुक्राने के तौर पर अदा की थीं, क्योंकि उस दिन अल्लाह तआला ने आपको जो कुछ दिया था।

(दलाइलुन-नुबुव्वत लिल-बैहक़ी, जिल्द 5, पृष्ठ 80, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब आप मक्का मुकर्रमा में दाखिल हुए तो लोग आपकी ज़ियारत के लिए आए। विनम्रता और शुक्र के भाव के कारण आपका सिर कजावे को छू रहा था। आप लोगों के बीच थे। आपने फरमाया:

अल्लाहुम्मा इन्नल-ऐशा ऐशुल-आख़िरह।

अर्थात्: ऐ अल्लाह! निश्चित रूप से असल जीवन तो आख़िरत का जीवन है।

(सुबलुल-हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 226, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम फरमाते हैं: "यह ऊँचाई जो खुदा तआला के खास बंदों को दी जाती है, वह विनम्रता के रंग में होती है और शैतान की ऊँचाई घमंड से मिली हुई थी।

देखो! हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मक्का को फतह किया तो आपने इसी तरह अपना सिर झुकाया और सजदा किया जिस तरह उन मुसीबतों और मुश्किलों के दिनों में झुकाते और सजदे करते थे जब इसी मक्का में आपकी हर तरह से विरोध किया जाता और आपको दुख दिया जाता था। जब आपने देखा कि मैं किस हालत में यहाँ से गया था और किस हालत में अब आया हूँ तो आपका दिल खुदा के शुक्र से भर गया और आपने सजदा किया।"

[(मलफ़ूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जिल्द 3, हाशिया, पृष्ठ 260, संस्करण 2022)]

आपकी एक दुआ का उल्लेख सहीह मुस्लिम की एक रिवायत में मिलता है। हज्जतुल-विदा के अवसर पर जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफा और मरवा की सई, यानी चक्कर लगाने का इरादा किया तो आपने सफा से शुरुआत की और उस पर चढ़े यहाँ तक कि बैतुल्लाह को देखा और किबला की ओर मुँह किया और अल्लाह तआला की एकता का बयान किया और उसकी बड़ाई का उल्लेख किया और फरमाया: अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। वह एक है। उसका कोई साझी नहीं। बादशाहत उसी की है। उसी की सारी प्रशंसा है। वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं। वह अकेला है। उसने अपना वादा पूरा किया और अपने बंदे की मदद की और लश्करों को अकेले ही पीछे हटा दिया। और फिर इसके बीच आपने दुआ की। दुआ की हालत में तीन बार इसी तरह आपने किया।

[(सहीह मुस्लिम, अनुवादित, जिल्द 6, पृष्ठ 118, किताबुल-हज, बाब हज्जतुन-नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हदीस 2123, नूर फाउंडेशन)]

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के यमन से हमदान कबीले की सूचना देने के बारे में एक रिवायत आती है। हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि 10 हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन की ओर भेजा और पूरे हमदान कबीले ने इस्लाम स्वीकार कर लिया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके इस्लाम स्वीकार करने की खबर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पत्र के माध्यम से दी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पत्र पढ़ा तो आप सजदे में गिर पड़े और फरमाया: हमदान पर सलाम हो। हमदान पर सलाम हो। यह बात दो बार कही।

(शरह अज़-ज़ुरक़ानी, जिल्द 4, पृष्ठ 140, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत; सुबलुल-हुदा वर्रशाद, जिल्द 8, पृष्ठ 205, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शुक्र के सजदे

के बारे में और अधिक जानकारी इस तरह मिलती है। हज़रत अबू बकरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जब कोई ऐसी बात आती जो आपको खुश करती या जो आपके लिए खुशी का कारण होती तो आप अल्लाह तबारक व तआला का शुक्र अदा करते हुए सजदे में गिर जाते।

(सुनन इब्न माजा, किताब इक़ामतिस्सलात, बाब मा जाअ फ़िस्सलात..., हदीस 1394)

इसी तरह हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से एक रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किसी उद्देश्य के बारे में खुशखबरी दी गई तो आप शुक्र करते हुए सजदे में गिर गए।

(सुनन इब्न माजा, किताब इक़ामतिस्सलात, बाब मा जाअ फ़िस्सलात..., हदीस 1392)

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने पर मोमिनों को जो अल्लाह तआला ने खुशखबरी दी और उस पर आपने जिस शुक्रगुजारी का इज़हार किया

उसका उल्लेख एक रिवायत में इस तरह मिलता है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ लाए और अपनी सदका की जगह की ओर गए। फिर अंदर तशरीफ ले गए। किबला की ओर मुँह करके सजदे में गिर गए और सजदा बहुत लंबा कर दिया, यहाँ तक कि मुझे लगा कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इसी हालत में आपकी रूह कब्ज़ कर ली है। जब मैं आपके पास बैठा तो आपने सिर उठाया और फरमाया: यह कौन है? मैंने अर्ज किया कि अब्दुर्रहमान। फरमाया: क्या बात है? मैंने अर्ज किया: या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आपने इतना लंबा सजदा किया कि मुझे डर हुआ कि कहीं अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इसी हालत में आपकी रूह कब्ज़ न कर ली हो, यानी आपकी मृत्यु या विसाल न हो गया हो। तो आपने फरमाया:

जिब्राइल मेरे पास आए थे और मुझे यह कहकर खुशखबरी दी कि अल्लाह तआला फरमाता है कि जो व्यक्ति आप पर दुरूद भेजेगा, मैं उस पर अपनी रहमत नाज़िल करूँगा। और जो आप पर सलाम भेजेगा, मैं उस पर सलाम भेजूँगा। इस पर मैंने अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल का शुक्र अदा करने के लिए सजदा किया था।

(मुस्नद अल-इमाम अहमद बिन हंबल, मुस्नद अब्दुर्रहमान बिन औफ, जिल्द 1, पृष्ठ 512-513, हदीस 1664, आलमुल-कुतुब, 1998 ई.)

और यह सजदा जो इतना लंबा हुआ, इस शुक्रगुजारी के तौर पर था।

हज़रत अबू बकरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि जब आपके पास खुशखबरी लाने वाला आया, जो आपको आपके लश्कर की दुश्मन पर जीत की खुशखबरी दे रहा था। उस समय आपका सिर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की गोद में था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए और सजदे में गिर पड़े।

(सुबलुल-हुदा वर्रशाद, जिल्द 8, पृष्ठ 205, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

एक रिवायत में है। अम्र बिन शुऐब अपने पिता से और वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना:

दो गुण ऐसे हैं कि जिस व्यक्ति में वे पाए जाएँ, अल्लाह तआला उसे सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला लिख देता है और जिसमें वे दोनों न हों, अल्लाह उसे न सब्र करने वाला लिखता है और न शुक्र करने वाला।

पहली यह कि जो व्यक्ति अपने धर्म के मामले में उसकी ओर देखे जो उससे ऊँचा हो और उसका अनुसरण करे। और दूसरी यह कि धर्म के मामले में उसकी ओर देखे जो उससे ऊँचा है और फिर यह देखे कि मैं उसका अनुसरण करूँ और उसके बराबर पहुँचूँ तो वह सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला होगा।

और दूसरी शर्त यह है कि जो अपनी दुनिया के मामले में उसकी ओर देखे जो उससे कम है, फिर वह अल्लाह तआला की प्रशंसा करे। सांसारिक मामलों में उसे देखे जो उससे कम है और फिर अल्लाह की प्रशंसा करे, शुक्र करे कि अल्लाह तआला ने मुझे दिया है। इस पर कि जिसके द्वारा अल्लाह ने उसे उस व्यक्ति पर श्रेष्ठता दी है, तो अल्लाह तआला उसे सब्र करने वाला और शुक्र करने वाला लिख देता है। और जो व्यक्ति अपने धर्म में उसकी ओर देखे जो उससे कमतर हो और अपनी दुनिया में उसकी ओर देखे जो उससे ऊँचा हो, फिर उस चीज़ पर दुख करे जो उससे रह गई, तो अल्लाह तआला उसे न सब्र करने वाला लिखता है और न शुक्र करने वाला।

(किताबुश-शुक्र, इब्न अबी अद-दुनिया, पृष्ठ 60, मक्तबतुत-तुरास अल-इस्लामी, 1994 ई.)

इसी तरह हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

उसकी ओर देखो जो तुमसे नीचे है और उसकी ओर मत देखो जो तुमसे ऊपर है। यह इस बात के अधिक योग्य है कि तुम अल्लाह की नेमत को छोटा न समझो।

[(सहीह मुस्लिम, अनुवादित, किताबुज़-ज़ुहद वर्रक़ाइक़, हदीस 5250, जिल्द 15, पृष्ठ 159, नूर फाउंडेशन)]

अर्थात् सांसारिक दृष्टि से नीचे की ओर देखो और फिर अल्लाह का शुक्र अदा करो कि अल्लाह तआला ने तुम्हें दिया हुआ है।

हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: चार चीज़ें ऐसी हैं कि जिसे ये दे दी जाएँ, उसे दुनिया और आख़िरत की भलाई दे दी गई। पहला, शुक्र करने वाला दिल। दूसरा, ज़िक्र करने वाली ज़बान। यानी ज़िक्र-ए-इलाही करने वाली ज़बान। तीसरा, आज़माइश के समय सब्र करने वाला शरीर। और चौथा, ऐसी पत्नी जो न अपनी इज़्ज़त और पवित्रता के मामले में और न पति के मामले में उसके साथ धोखा करे। अच्छी पत्नी

हो और बाकी ये चार चीज़ें हों तो भलाई दी जाती है।

(किताबुश-शुक्र, इब्न अबी अद-दुनिया, पृष्ठ 17, मक्तबतुत-तुरास अल-इस्लामी, 1994 ई.)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: ऐ अबू हुरैरा! परहेज़गार बनो, तुम सबसे अधिक इबादत करने वाले हो जाओगे। और संतुष्ट रहने वाले बनो, संतोष करो, तुम सब लोगों से अधिक शुक्र करने वाले हो जाओगे। अतः संतोष भी शुक्रगुजारी की ओर ले जाता है। और लोगों के लिए वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो तो मोमिन हो जाओगे। और जो तुम्हारा पड़ोसी है, उसके साथ अच्छा पड़ोस का व्यवहार करो तो तुम मुसलमान हो जाओगे। और कम हँसो, क्योंकि हँसने की अधिकता दिल को मरा हुआ कर देती है।

(सुनन इब्न माजा, किताबुज़-ज़ुहूद, बाबुल-वरअ वत्तक़्वा, हदीस 4217)

अर्थात् इंसान को अल्लाह तआला के सामने अधिक झुकने वाला होना चाहिए। दुआओं की ओर ध्यान रहना चाहिए। हर समय हँसी-मज़ाक में नहीं लगे रहना चाहिए। अल्लाह तआला हमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश पर अमल करने वाला बनाए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लगातार शुक्र और ज़िक्र-ए-इलाही का चित्र खींचते हुए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सभी समय में अल्लाह का ज़िक्र किया करते थे।

[(सहीह मुस्लिम, अनुवादित, किताबुल-हैज़, बाब: जनाबत आदि की हालत में अल्लाह तआला का ज़िक्र करना, हदीस 550, जिल्द 2, पृष्ठ 126, प्रकाशित नूर फाउंडेशन)]

अतः आपने अपनी उम्मत के सामने अपने आदर्श जीवन के सबसे ऊँचे नमूने स्थापित किए और हमें नसीहत फरमाई। अल्लाह तआला हमें इस पर अमल करने की भी तौफीक दे।

दूसरी बात जो यह है, संक्षेप में कह देता हूँ कि:

अगले शुक्रवार को इंशाअल्लाह तआला जमाअत अहमदिया ब्रिटेन का जलसा सालाना भी शुरू हो रहा है। दुआ करें कि अल्लाह तआला इसे हर लिहाज़ से बरकत वाला बनाए। हर एक को हर तरह अपनी हिफाज़त और अमान में रखे। आजकल गर्मी के कारण मौसम की जो सख्ती है, उसके कुछ खतरे भी हैं। हर प्रकार के बुरे प्रभावों से अल्लाह तआला सुरक्षित रखे। और इसी तरह जो ड्यूटी देने वाले कार्यकर्ता हैं, उन्हें कभी-कभी गर्मी में खड़े होकर भी ड्यूटी देनी पड़ती है और कठिन ड्यूटियाँ भी होती हैं। अल्लाह उन्हें भी अच्छे ढंग से अपने कर्तव्यों को पूरा करने की तौफीक दे।

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

और ख़ुदा के निशान किस तरह प्रकट होते हैं और किस तरह दुआएँ क़बूल हो जाती हैं। और यह सब कुछ हमनेआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी पैरवी से पाया। और जो कुछ क़िस्सों के रूप में दूसरी क़ौमें बयान करती हैं, वह सब कुछ हमने देख लिया।

इसलिए हमने ऐसे नबी का दामन थामा है जो ख़ुदा तक पहुँचने का रास्ता दिखाने वाले हैं।

किसी ने यह शेर बहुत ही अच्छा कहा है:

मुहम्मद स अ व अरबी बादशाह-ए-हर दो सरा
करे है रूह-ए-क़ुद्स जिसके दर की दरबानी
उसे ख़ुदा तो नहीं कह सकूँ, पर कहता हूँ
कि उसकी मर्तबा-दानी में है ख़ुदा-दानी

हम किस ज़बान से ख़ुदा का शुक्र करें, जिसने ऐसे नबी की पैरवी हमें नसीब की, जो नेक लोगों की रूहों के लिए उसी तरह सूरज है जैसे शरीरों के लिए सूरज।"

अर्थात जो नेक स्वभाव वाले लोग हैं, उनकी रूह को ताज़गी देने और उन्हें नूर पहुँचाने के लिए एक सूरज है, जैसे हमारे शरीर की सेहत के लिए एक सूरज है।

"वह अँधेरे के समय में प्रकट हुआ और दुनिया को अपनी रोशनी से रोशन कर दिया। वह न थका, न कमज़ोर पड़ा, जब तक कि अरब के पूरे क्षेत्र को शिर्क से पाक न कर दिया। वह अपनी सच्चाई की ख़ुद ही दलील है, क्योंकि उसका नूर हर एक ज़माने में मौजूद है।

और उसकी सच्ची पैरवी इंसान को इस तरह पाक करती है, जैसे एक साफ़ और पारदर्शी नदी का पानी मैले कपड़े को।

कौन सच्चे दिल से हमारे पास आया, जिसने इस नूर का दर्शन न किया, और किसने नेक नीयत से इस दरवाज़े को खटखटाया, जो उसके लिए खोला न गया।

लेकिन अफ़सोस कि अधिकतर इंसानों की यही आदत है कि वे निचले दर्जे की ज़िंदगी को पसंद कर लेते हैं और नहीं चाहते कि नूर उनके अंदर प्रवेश करे।"

(चश्मा-ए-मआरिफ़। रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 23, पृष्ठ 301, 302, 303)
(माख़ूज़ अज़ अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल, दिनांक 3 सितंबर 2026)

★ ★ ★

पृष्ठ 16 का शेष

का उल्लेख किया तो फ़रमाया, यह बहुत अच्छा अवसर है, यहाँ कर लो।

अतः हुज़ूर ने मेरे निवेदन पर स्वयं मास्टर क़ादिर बख़्श साहब से मेरे संबंध में कहा। उन्होंने बिना किसी बहाने के स्वीकार कर लिया, हालाँकि वे जानते थे कि मेरी केवल साढ़े चार रुपये तनख़्वाह है और पत्नी-बच्चे भी हैं।

स्वीकार करने के बाद उन्होंने कहा कि हुज़ूर, मेरा पिता बहुत विरोधी है, लेकिन वह मेरी इच्छा के बिना कुछ नहीं कर सकता। इसलिए या तो मैं उसे राज़ी कर लूँगा या जब वह मर जाएगा तो शादी कर दूँगा।

हज़रत साहब बहुत खुश हुए और फिर मुझे बाग़ की ओर ले गए और रास्ते में मुझे उनका जवाब सुनाया और पिता के मरने वाले शब्द सुनाकर हँसे।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब कहते थे कि इसके बाद मास्टर क़ादिर बख़्श साहब को अपने पिता की ओर से बहुत तकलीफ़ें सहनी पड़ीं, लेकिन उन्होंने अपनी बहन की शादी दूसरी जगह नहीं होने दी और अंत में मेरे साथ अपनी बहन की गुप्त शादी कर दी।

निकाह के समय मैंने उनसे कहा कि जो लेख या शर्तें आदि मुझसे लिखवानी हों, लिखवा लो। उन्होंने कहा, शर्तें कैसी? मेरी लिखावट और शर्तें सब हज़रत साहब हैं।

फिर मेहर के संबंध में मैंने पूछा तो उन्होंने कहा कि सवा तीस रुपये मेहर होगा। मैंने कहा नहीं, बल्कि एक सौ रुपये होना चाहिए, लेकिन उन्होंने अपनी राय पर ज़ोर दिया। इस पर मैंने उनसे कहा कि मुझे सपना आया था कि मेरा दूसरा निकाह हुआ है और मेहर एक सौ रुपये रखा गया है। इस पर उन्होंने मान लिया।

फिर विदाई भी गुप्त रूप से हुई। लेकिन अंत में मास्टर क़ादिर बख़्श साहब के पिता भी राज़ी हो गए।

इसके अलावा मियाँ अब्दुल्लाह साहब बयान करते थे कि जब हज़रत साहब सरहिंद तशरीफ़ ले गए थे तो उसी यात्रा में थोड़ी देर के लिए सनौरी भी गए थे।

★ ★ ★

अख़बार बदर ख़ुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

हमारे मार्गदर्शक हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फ़रमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुजुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हुज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दू के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें। (प्रबंधन)

ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 जुलाई 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

यूके के जलसा सालाना 2026 ई. के अवसर पर कार्यकर्ताओं और मेहमानों को सुनहरी नसीहतें

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आज जलसा सालाना ब्रिटेन शुरू हो रहा है।

देश के कोने-कोने और दुनिया के अलग-अलग देशों से मेहमान इसमें शामिल होने के लिए आ रहे हैं या आ चुके हैं। ये सभी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान हैं, जो एक खास धार्मिक उद्देश्य के लिए यहाँ आ रहे हैं। इसलिए

इन मेहमानों की मेहमाननवाज़ी भी एक खास सम्मान रखती है।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुनिया के हर देश में जहाँ जलसा सालाना होते हैं, वहाँ के बच्चे, जवान, पुरुष और महिलाएँ इस बात को समझते हैं कि हमें जलसे के मेहमानों की सेवा करनी है और इसके लिए सभी अपने आपको वालंटियर के रूप में, स्वयंसेवक के रूप में पेश करते हैं।

इस बात से अलग कि अब दुनिया वालों की प्राथमिकताएँ बदल गई हैं, जमाअत के मुख़्लिस लोग अपने आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए पेश कर रहे हैं और जैसा कि मैंने कहा, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक और अलग-अलग दुनियावी कामों में व्यस्त लोग इन दिनों में अपने कामों से छुट्टी लेकर अपने आपको सेवा के लिए पेश करते हैं। ये वे लोग हैं जो इस बात को समझते हैं कि

अल्लाह तआला ने मेहमानों की सेवा और सम्मान तथा आदर का आदेश दिया है। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अमल और कथन से इस बात की शिक्षा दी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस ओर बार-बार ध्यान दिलाया है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मुसाफ़िरों को उनका हक़ दो (बनी इसराईल:27)। इसी तरह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का उदाहरण क़ुरआन शरीफ़ में दर्ज है कि जब मेहमान आपके पास आए तो आपने मेहमानों को देखकर यह नहीं पूछा कि खाना खाओगे या नहीं खाओगे, बल्कि तुरंत एक बछड़ा ज़बह किया और उसे भूनकर फिर मेहमानों के सामने पेश किया। (हूद:70)

इसी तरह एक हदीस में आता है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखने वाले मेहमान का उचित हक़ अदा करें या करें। अर्ज़ किया गया कि उचित हक़ क्या है? आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक दिन और एक रात की मेहमाननवाज़ी है। और दूसरी जगह यह भी रिवायत मिलती है कि तीन दिन तक उसकी मेहमाननवाज़ी करो।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल-अदब, बाबु इकरामिद-ज़ैफ़ि व ख़िदमतिही इय्याहु बिनफ़्सिही, हदीस 6135)

यह तो खास मेहमानों के लिए है। आम तौर पर जो लोग घरों में आते हैं, कुछ दिनों के लिए आते हैं। सामान्य रूप से जब कोई मेहमान आए तो उसकी मेहमाननवाज़ी करनी चाहिए। यही मुसलमानों को आदेश है और आजकल जलसे के दिनों में जो मेहमान आ रहे हैं, ये दूर-दराज़ के सफ़र करके आ रहे हैं। दुसरे देशों से आ रहे हैं। ये तो तीन दिन से भी अधिक ठहरेंगे। जमाअती व्यवस्था के अंतर्गत ये जितने दिन भी ठहरें, तीन से चार सप्ताह तक या दो से तीन सप्ताह तक, जमाअत उनकी मेहमाननवाज़ी करती है और इसके लिए अल्लाह तआला का यह बहुत बड़ा एहसान है कि जमाअत के पास उनकी मेहमाननवाज़ी करने के लिए इतनी बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद हैं जो paid कार्यकर्ता नहीं हैं। तीन से चार सप्ताह तक स्वयंसेवक अपने आपको इस उद्देश्य के लिए पेश करते हैं।

बल्कि यहाँ यूके में मेहमाननवाज़ी का इतना बड़ा और व्यापक प्रबंध हो गया है कि पूरे साल ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का लंगर चलता है और इस लंगर में सेवा के लिए बहुत से लोग, जिनके अपने कारोबार हैं, कुछ के अपने रेस्टोरेंट हैं, कुछ के कैटरिंग के कारोबार हैं, वे सभी लोग पूरे साल ही मेहमानों की सेवा के लिए कुछ न कुछ समय पेश करते हैं। और यह विशेषता अब ब्रिटेन की जमाअत को इसलिए भी प्राप्त है क्योंकि यहाँ ख़िलाफ़त मौजूद है और ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की मौजूदगी के कारण लोगों का यहाँ आना-जाना बहुत अधिक है और इसके कारण मेहमाननवाज़ी भी करनी पड़ती है। सामान्य मेहमाननवाज़ी तो यहाँ जारी ही है और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के लोग बड़ी अच्छी तरह यह मेहमाननवाज़ी कर रहे हैं। अल्लाह तआला इन सभी को बदला दे।

कार्यकर्ताओं के अलावा बाक़ायदा वालंटियर के रूप में भी लोग बहुत सेवा कर रहे हैं, जैसा कि मैंने कहा, लेकिन बहरहाल इन दिनों में, जैसा कि मैंने कहा, ये जलसे के दिन हैं। हमें खास तौर पर मेहमानों का ख़याल रखना चाहिए और जैसा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उसका, यानी मेहमान का, पूरा सम्मान और आदर करो क्योंकि यह ज़रूरी है। हमारे ईमान के लिए ज़रूरी है। अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान के लिए ज़रूरी है। ईमान की यह भी एक शर्त है कि एक मोमिन मेहमाननवाज़ होता है। खुश-अख़लाक़ होता है और अच्छे व्यवहार से अपने मेहमानों से पेश आता है। इसलिए

यह बहुत बड़ा सम्मान है जो इन दिनों हमारे हज़ारों वालंटियर्स को मिल रहा है, जिनमें लड़कियाँ और महिलाएँ भी शामिल हैं। लड़के और पुरुष भी शामिल हैं और बड़ी उम्र के भी शामिल हैं, छोटी उम्र के भी शामिल हैं।

तो इन सभी को यह सम्मान मिल रहा है और

उन्हें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि जो सम्मान उन्हें मिल रहा है, उसका हक़ तभी अदा होगा जब मेहमाननवाज़ी का हक़ अदा करेंगे। हर मेहमान से इज़्ज़त और सम्मान से पेश आएँगे। अच्छे व्यवहार से पेश आएँगे और उनके जज़्बात का ख़याल रखने वाले होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेहमान के जज़्बात बहुत नाज़ुक होते हैं। इसलिए उनका हमेशा ख़याल रखना चाहिए।

(माख़ूज़ अज़ मलफ़ूज़ात जिल्द 5, पृष्ठ 111, संस्करण 2022)

इसलिए हमें इस बात को भी नहीं भूलना चाहिए कि हमने मेहमानों की हर तरह से सेवा करनी है। अगर हमने अपने आपको पेश किया है तो फिर अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए इस फ़र्ज़ को पूरा करने की भरपूर कोशिश भी करनी चाहिए, ताकि इस सेवा के बदले में अल्लाह तआला भी हमसे राज़ी हो और जहाँ तक हो सके हम मसीह मुहम्मदी के मेहमानों की सेवा का हक़ अदा कर सकें।

हमारे जो कार्यकर्ता मेहमाननवाज़ी करते हैं या हमारे जलसे के जो प्रबंध होते हैं, उनसे और इन प्रबंधों से बाहर से आए हुए ग़ैर-जमाअत और ग़ैर-मुस्लिम मेहमान भी बहुत प्रभावित होते हैं। वे यह देखकर हैरान होते हैं कि इतने हज़ार लोगों का खाना पक रहा है और वालंटियर्स खाना पका रहे हैं। फिर उन्हें एक व्यवस्था के तहत खाना भी खिलाया जा रहा है और उनकी सेवा भी की जा रही है।

फिर कार्यकर्ताओं की एक पूरी व्यवस्था है जो यहाँ चलाई जा रही है, जिसमें ट्रैफ़िक की व्यवस्था भी है। खाना खिलाने की व्यवस्था है। सफ़ाई की व्यवस्था है। पकाने की व्यवस्था है। पानी की सप्लाई की व्यवस्था है। संक्षेप में, बहुत-सी व्यवस्थाएँ हैं जिनमें अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत के वालंटियर्स काम कर रहे हैं और न केवल काम कर रहे हैं, बल्कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बहुत अच्छे ढंग से काम कर रहे हैं। ग़ैर लोग इसे देखकर बहुत प्रभावित होते हैं। यह भी तब्लीग़ का एक माध्यम है। इसलिए

यहाँ आने वाले हर कार्यकर्ता को, जिनमें से कुछ तो पुराने और अनुभवी हैं लेकिन जो नए हैं, उन्हें भी याद रखना चाहिए कि आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा के लिए यहाँ आए हैं तो फिर इसका हक़ अदा करने की भरपूर कोशिश करें और मेहमान का जो हक़ है, वह अदा करें। यह आपके ईमान के लिए ज़रूरी है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेहमानों की किस हद तक सेवा

किया करते थे या उनका ख़याल रखवाया करते थे। एक रिवायत में आता है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेहमानों की ख़ातिर-तवाज़ो का बहुत ख़याल रखते थे। हाफ़िज़ हामिद अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लंगर के मेहमानों का ख़याल रखने के लिए नियुक्त किए गए तो आप अलैहिस्सलाम, यानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, उन्हें ध्यान दिलाते थे कि इन मेहमानों का खास ख़याल रखो और सामान्य दिनों में मेहमानों की हैसियत के अनुसार उनकी सेवा भी करो।

(माख़ूज़ अज़ ज़िक्र-ए-हबीब, हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब, पृष्ठ 153)

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सामान्य दिनों में जमाअत के जो मेहमान आते हैं, जहाँ तक हो सके जमाअत अपने साधनों के अंदर रहते हुए उनकी सेवा करती है, लेकिन जलसे के दिनों में इस तरह ख़याल नहीं रखा जा सकता। यहाँ एक सामान्य मेहमाननवाज़ी होती है। इसलिए इसमें भी बहुत अधिक सावधानी और ख़याल रखने की ज़रूरत है।

एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि लगभग 1902 में जब मैं ऐमनाबाद से क़ादियान आ रहा था तो क़ादियान के सफ़र के इंतज़ार में लाहौर स्टेशन में बैठा था। वहाँ मुझे एक दोस्त मिल गए। ख़ैर, हम दोनों ने क़ादियान के लिए सफ़र शुरू किया। रास्ते में बहुत बारिश होती रही। बटाला पहुँचे तो बहुत ज़ोर की बारिश हो रही थी। बहरहाल, हम वहाँ उतरकर टाँगा या इक्का किराए पर लेकर क़ादियान के लिए रवाना हो गए।

क़ादियान के क़रीब पहुँचे तो उस समय, कहते हैं, शायद बारिश रुक गई थी। बहरहाल, वे कहते हैं कि दारुल-अमान हम पहुँचे और हमारे पहुँचने पर हम दोनों को हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के आदेश से उस कमरे में जगह दी गई जो उन दिनों, जब वे यह घटना बयान कर रहे थे, एक बुक शॉप थी।

बहरहाल, कहते हैं कि सुबह नाश्ते के समय हमें बहुत अच्छा नाश्ता करवाया गया। खाना भी बहुत अच्छी तरह खिलाया गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बार-बार शाह साहब और जो दूसरे मेहमान उनके साथ थे, उनसे पूछते, अगर आपको कोई तकलीफ़ हो तो बताएँ। कोई तकलीफ़ तो नहीं है। इसी तरह उनसे भी पूछते थे। तो आप अलैहिस्सलाम मेहमानों का बहुत हद तक और अत्यंत स्तर तक सम्मान किया करते थे।

(माख़ूज़ अज़ रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 155)

फिर इसी तरह भेरा के मंज़ूर अहमद साहब लिखते हैं कि मेरे पिता बुज़ुर्ग बहुत पहले के अहमदी हैं। 1894 में वे अपनी माता के साथ पहली बार हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलने के लिए क़ादियान आए और माता के साथ उसी समय बैअत भी कर ली। कहते हैं कि ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे दादा से बचपन में पढ़ते रहे थे और जो मेरे दादा थे, उनकी जो तीसरी पत्नी थीं, वह हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु की मुँह-बोली बहन भी थीं।

कहते हैं कि मैंने पिता बुज़ुर्ग से पूछा कि कोई घटना आपको याद है, जब उस ज़माने में आप आया करते थे? तो आपने बताया कि हम आठ आदमी एक दिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम के साथ दोपहर का खाना खाने के लिए मस्जिद मुबारक में थे, जो उस समय अभी पहली अवस्था में थी। हम मस्जिद में खाना खा रहे थे। उस समय बहुत छोटी-सी मस्जिद थी और मेहमानों के बैठने की कोई जगह तो थी नहीं। आप अलैहिस्सलाम वहीं बिठाया करते थे। एक पंक्ति में आठ-दस आदमी बैठते थे। स्वयं हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु भी इस सभा में शामिल थे।

कहते हैं कि दो प्रकार की सब्ज़ी थी। घर से पककर आया करती थी और दोनों में मांस था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी प्लेट में से, अपने सालन में से बोटी उठाकर बार-बार दूसरों के सालन में रख देते थे। अपनी प्लेट में जब भी कोई बोटी आती तो उसे दूसरों के सालन में रख देते और ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में भी कहते हैं कि वे भी आप अलैहिस्सलाम को देखकर मेहमानों की ख़ातिर इसी तरह किया करते थे।

कभी-कभी मेहमान किसी चीज़ की इच्छा कर देते थे। एक बार एक मेहमान ने खाना खाने के दौरान इच्छा की कि आम खाने को दिल चाह रहा है। आप अलैहिस्सलाम ने कहा कि खाने के साथ आम खाने का बहुत अच्छा ख़याल तुम्हारे दिल में आया है। तो किसी दूसरे ने, जो वहाँ बैठे हुए थे, मेहमानों में से या वहाँ के स्थानीय लोगों में से, उन्होंने कहा कि मैं जाकर बाज़ार से अभी आम ले आऊँ?

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: नहीं! बैठो। थोड़ी देर के बाद एक पार्सल आया। उसमें किसी ने आम भेजे हुए थे और आठ आम थे। आदमी भी आठ थे और जो पार्सल आया उसमें आम भी आठ थे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक-एक आम हर एक को दिया और अपना जो आम था, अपने हिस्से में आया, वह भी काटकर लोगों को पेश करते रहे और मेहमाननवाज़ी फ़रमाते रहे।

(माख़ूज़ अज़ रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 204-205)

इसी तरह हज़रत बद्रुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु मालीर कोटला के थे। वे कहते हैं कि एक रोज़ यह आजिज़ अपने पिता साहब के साथ बोर्डिंग वाले कुएँ से पानी निकाल रहा था। रात के नौ बज चुके थे और नमाज़ इशा भी हो चुकी थी। हुज़ूर अलैहिस्सलाम अपने हाथ में एक प्याला, जिसमें दूध और डबल रोटी रखी थी, उठाए कुएँ पर आ गए और आकर मेरे पिता साहब से फ़रमाने लगे: बाबा जी! कोई मेहमान भूखा है?

इस पर पिता साहब ने कहा कि हुज़ूर! मियाँ नजमुद्दीन सब जगहों पर पूछकर आ गए हैं। सभी ने खाना खा लिया है। तब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: अच्छा, फिर मेरे साथ चलो।

तब हम दोनों बाप-बेटा हुज़ूर अलैहिस्सलाम के साथ हो लिए। जब मेहमानखाने में जाकर मेहमानों से मालूम किया तो कोई न मिला। सभी ने खाना खाया हुआ था। फिर कहते हैं कि वहाँ शेर मुहम्मद की एक दुकान थी। उस समय खुली हुई थी। हम उसके पास पहुँचे तो वहाँ एक साहब ने कहा कि हुज़ूर! मुझे तो दूध-डबल रोटी खानी है। इस पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने वह प्याला उन्हें दे दिया।

(माख़ूज़ अज़ रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 3, पृष्ठ 285)

अल्लाह तआला ने भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ से उनको खिलाना था और उनकी ज़रूरत भी थी। हुज़ूर अलैहिस्सलाम के दिल में अल्लाह तआला ने डाला कि जाओ, मेहमानों को खिलाओ और फिर आप अलैहिस्सलाम उस मेहमान की सेवा के लिए ले आए।

तो इस तरह के बहुत सारे घटनाएँ हैं जो आप अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में मिलते हैं। सामान्य परिस्थितियों में भी आप मेहमाननवाज़ी फ़रमाया करते थे। इसलिए कि मेहमान के सम्मान, इज़्ज़त और आदर का ज़िक्र है। भूखे को खाना खिलाने का ज़िक्र है। ज़रूरतमंद को खाना खिलाने का ज़िक्र है। यह अल्लाह तआला का आदेश है।

इसी तरह हज़रत डॉक्टर हशमतुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु अपना एक घटना बयान करते हैं। कहते हैं कि जलसे के अवसर पर एक रात बतौर जमाअत के सचिव के सदर अंजुमन के इजलास में मुझे जाना था। मग़रिब और इशा की नमाज़ के बाद इजलास होता था। केवल जमाअतों के पदाधिकारी आते थे और उनसे बैठक होती थी। कहते हैं, मग़रिब और इशा की नमाज़ के बाद मस्जिद मुबारक में इजलास होना था और समय थोड़ा था, तो मैंने कहा कि खाना मैं बाद में खा लूँगा। यद्यपि उस समय मुझे भूख भी लगी हुई थी और सुबह आठ बजे से मैंने खाना खाया हुआ था, लेकिन कहते हैं क्योंकि जमाअती ज़िम्मेदारी थी, इसलिए बहरहाल मैंने कहा कि अब खाना बाद में खा लूँगा।

जब बैठक समाप्त हुई तो रात को देर से मैं लंगरख़ाने पहुँचा। उस समय 11 बज गए थे और मुझे बहुत ज़्यादा भूख लगी हुई थी। कहते हैं कि जब मैं अपनी जमाअत के लोगों में गया और वहाँ खाने का पता किया तो पता लगा कि खाना तो ख़त्म हो गया है। कहते हैं, उस समय खाना तो ख़त्म हो गया। तो वहाँ हमारे एक दोस्त गए और दस्तरख़ान में से एक रोटी का टुकड़ा लेकर आए कि लंगरख़ाना तो अब बंद हो गया है, इस टुकड़े को आप खा लें। आज इसी पर गुज़ारा करें।

तो कहते हैं, मैंने भी उस टुकड़े को चबाना शुरू कर दिया। अभी मैंने उस टुकड़े को ख़त्म नहीं किया था कि हमारे कमरे के दरवाज़े पर ज़बरदस्त दस्तक हुई। ज़ोर से किसी ने खटखटाया और आवाज़ आई कि कोई मेहमान भूखा है, जिसने खाना न खाया हो तो वह आ जाए और चलकर लंगरख़ाने में खाना खा ले।

ख़ाकसार के साथियों ने मुझे भी बाहर निकाल दिया और लंगर में पहुँचकर जो कुछ मिला, बाद में शुक्र के साथ खाया। कहते हैं कि अगले रोज़ दिन के 10 बजे मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मस्जिद मुबारक की छोटी सीढ़ी के दरवाज़े पर खड़े हुए देखा और ख़ुद्दाम को गली में हुज़ूर अलैहिस्सलाम की ओर मुँह किए खड़े देखा। हुज़ूर अलैहिस्सलाम उनसे संबोधित थे। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु भी वहाँ मौजूद थे। हुज़ूर अलैहिस्सलाम जोश के साथ फ़रमा रहे थे कि

मेहमान के खाने आदि का प्रबंध अच्छा होना चाहिए क्योंकि रात मुझे अल्लाह तआला ने इल्हाम किया है कि يَاأَيُّهَا النَّبِيُّ أَطْعِمُوا الْجَائِعَ وَالْمُعْتَرَّ। कि ऐ नबी! भूखे और मुअत्तर लोगों को खाना खिलाओ।

चुनाँचे मुझे मालूम हुआ कि आधी रात को जो मुझे जगाया गया था, वह इस इल्हाम के कारण था। रात को जो दस्तक हुई और किसी ने मुझे खाना खिलाया, वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ही अल्लाह तआला ने बताया था, तभी उन्होंने भेजा था।

(माख़ूज़ अज़ रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 155-156)

(तज़्किरा, पृष्ठ 631)

तो ये नेक लोग थे जिनकी भूख की तकलीफ़ को अल्लाह तआला भी महसूस

करता था और फिर अपने नबी को सूचना दे देता था। वहाँ तो ऐसे प्रबंध थे कि व्यवस्था हो गई, लेकिन यहाँ हमारे जलसे की इंतज़ामिया को चाहिए कि इस बात का ख़याल रखें कि जो मेहमान देर से आते हैं, कभी रात को सफ़र करके दूर-दराज़ से आए होते हैं। यूरोप के सफ़र से आए हैं। कभी फ़ेरी देर से हो गई। कभी जहाज़ देर से हो गया। कभी सफ़र में ट्रैफ़िक में फँस गए तो उनके लिए खाने का प्रबंध होना चाहिए।

लेकिन यह सावधानी हो कि खाना सही हालत में हो। ऐसा न हो कि गर्मी के कारण खाना ख़राब हो गया हो और आप बासी खाना खिला दें और वह किसी बीमारी का कारण बन जाए। इस लिहाज़ से भी मेहमान की मेहमाननवाज़ी को हमेशा याद रखना चाहिए कि उनका ख़याल भी रखना है और अच्छा और बढ़िया खाना भी खिलाना है।

एक बार हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: "सब आने वालों को एक ही प्रकार का खाना खिलाओ।" यानी जलसे पर आने वाले लोगों को एक ही प्रकार का खाना खिलाओ। कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

"इस पर ख़्वाजा साहब या किसी और ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर, कुछ ऐसे ग़रीब भी आते हैं जिनको अपने घर में दाल भी उपलब्ध नहीं होती।" वे तो दाल भी नहीं खा सकते। चटनी से रोटी खा लेते हैं। "इसलिए उनको यहाँ दाल खिलाना बुरा नहीं" है। उनके लिए सालन और मांस पकाने की ज़रूरत नहीं। दाल भी खिला दी जाए तो कोई हर्ज नहीं। कोई ज़रूरत नहीं है कि उनके लिए मांस का सालन बनाया जाए।

"हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि यद्यपि उनको घर में दाल न मिलती हो, लेकिन जब दूसरों को मांस या पुलाव खाते हुए देखेंगे तो उनको खाने की इच्छा ज़रूर पैदा होगी और न मिलने की स्थिति में उनका दिल टूटेगा।" यह तो मेहमान का दिल दुखाना है कि एक ओर एक मेहमान को बैठाकर तुम मांस खिला रहे हो और दूसरे को कह दो कि दाल खाओ। यह नहीं हो सकता। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

"मेरे मुरीद चाहे वे ग़रीब हों या अमीर, मेरा उनके साथ एक जैसा संबंध है।"

(रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 65)

इसलिए एक ही प्रकार का खाना पकाओ। मांस, पुलाव आदि दो तो सबको दो और दाल दो तो फिर सबको दो। हाँ! अगर तुम्हारे पास गुंजाइश नहीं है और दाल खिलानी है तो फिर सबको दाल मिलेगी। ऐसा नहीं है कि कुछ को मांस दे दो और कुछ को दाल खिला दो। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तरीके थे। आपके अंदाज़ थे। आपकी नसीहत करने के तरीके थे और आपकी मेहमाननवाज़ी के तरीके थे।

हज़रत चौधरी अब्दुर्रहीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हु भी इसी तरह बयान करते हैं कि एक बार हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने मुझे पाँच सौ रुपये दिए और फ़रमाया कि जलसे का प्रबंध आपके सुपुर्द है, लेकिन याद रहे कि सभी दोस्तों के साथ केवल एक ही प्रकार का व्यवहार करना है और एक ही प्रकार का खाना हर एक के लिए तैयार करना है।

सामान्य परिस्थितियों में तो अलग-अलग खाने पक जाते हैं, जैसा कि मैंने कहा, लेकिन उन दिनों में आपने फ़रमाया कि एक ही खाना पकेगा। तो कुछ लोगों ने हकीम फ़ज़ल दीन साहब का नाम लिया और अर्ज़ की कि वे अधिक अनुभवी हैं, यह प्रबंध उनको दे दें। वे अधिक अच्छे ढंग से कर लेंगे, मगर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने कोई उत्तर नहीं दिया और चौधरी अब्दुर्रहीम साहब को ही फ़रमाया कि आप यह प्रबंध करें।

वे कहते हैं कि इस दौरान ख़्वाजा कमालुद्दीन साहब मेरे पास आए और मुझे कहने लगे कि मेरे लिए चावल तैयार करवा दो क्योंकि हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने तुम्हें खाने का प्रबंध दिया है। कहते हैं, मैंने उन्हें कहा कि मुझे तो हज़रत साहब अलैहिस्सलाम का यह आदेश भी है कि सबके लिए एक ही प्रकार का खाना तैयार करवाया जाए। इसलिए अगर चावल खाना चाहते हैं तो फिर अनुमति लेकर आएँ।

ख़्वाजा साहब कहने लगे कि चावलों के लिए क्या अनुमति माँगूँ? तो मैंने कहा, फिर मैं भी हुज़ूर अलैहिस्सलाम की अनुमति के बिना चावल का एक दाना भी नहीं दे सकता। इस पर वे बहुत नाराज़ हुए और कहते हैं कि जब तक यहाँ रहे, मुझसे नाराज़ ही रहे।

(माख़ूज़ अज़ रिवायात-ए-असहाब-ए-अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 333)

बहरहाल, इस बात का मेहमानों को भी ख़याल रखना चाहिए कि लंगर के प्रबंध के अंतर्गत जो खाना पकता है, जो भी मिलता है, उसे सब्र और शुक्र से खा लेना चाहिए और जब आप यहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बुलाने पर आए हैं और इस उद्देश्य के लिए आए हैं कि हमने यहाँ रूहानी मायदह प्राप्त करना है तो रूहानी मायदह की ओर अधिक ध्यान होना चाहिए और अगर खाने में कोई कमी-बेशी हो भी जाए तो सहन कर लेना चाहिए और माँग नहीं करनी चाहिए।

कुछ लोग अगर बहुत अधिक माँग न भी करें तो फिर बाज़ारों में जाकर वहाँ खाने की कोशिश करते हैं और फिर वहाँ देर तक दुकानें खुली रहती हैं। फिर इंतज़ामिया को परेशानी का सामना करना पड़ता है। और आजकल के जो हालात हैं, खास तौर पर मौसम के हालात, सूखा मौसम है। इसमें वहाँ बाहर खाना पकाना और कभी देर तक बैठे रहना, जबकि इंतज़ामिया के कुछ विभाग अपना काम भी समेट लेते हैं और पूरी तरह निगरानी नहीं होती, यह कभी-कभी असुरक्षित हो जाता है। इसलिए

मेहमान भी इस बात का ख़याल रखें कि इन तीन दिनों में जो भी मिल जाए, उसे सब्र और शुक्र से खा लें और किसी प्रकार का ऐसा इज़हार न करें कि यह चीज़ हमें पसंद नहीं और हमने नहीं खानी।

साथ ही मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि खाने को कभी बर्बाद भी न करें। जितना मिले या जितना लें, तो उतना ही लें जितना आप खा सकते हों।

और जैसा कि मैंने कहा, असल चीज़ रूहानी भोजन है जिसकी ख़ातिर हम जलसे में आए हैं और हमने यहाँ अपनी रूहानी ज़िंदगी को बेहतर बनाने की ओर अधिक ध्यान देना है। भोजन तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मिलता है, वह मिल ही जाता है। तीन दिन तक इंसान सब्र और शुक्र से कम या थोड़ा खाने पर या ऐसी चीज़ खाने पर जो कभी-कभी पसंद भी नहीं होती, गुज़ारा कर ही लेता है।

इसी तरह शेख़ ज़ैनुलआबिदीन साहब कहते हैं कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम के ज़माने में मेहमानों के लिए खाने का खास प्रबंध हुआ करता था। सामान्य परिस्थितियों में हुज़ूर अलैहिस्सलाम को मेहमानों की ख़ातिरदारी का खास ख़याल रहता था।

कहते हैं, मेरे भाई हाफ़िज़ हामिद अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि एक बार, शायद जलसा सालाना का अवसर था। चावलों की चार देगें पकी हुई थीं। उस ज़माने में चार देगें भी बहुत होती थीं। दो ज़र्दे की और दो पुलाव की।

एक दिन हज़रत अलैहिस्सलाम सुबह-सवेरे लंगरख़ाने में गए और बावर्ची से कहा कि ढक्कन उठाओ, हम चावल देखना चाहते हैं। उसने ढक्कन उठाया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम को ख़ुशबू अच्छी नहीं लगी। लगा कि उसमें कोई सड़ांध-सी पैदा हो गई है। इस पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने दूसरी देगें भी देखीं और फ़रमाया कि ज़र्दे की दोनों देगें ठीक नहीं हैं। इनको ढाब में फेंक दो। यह इंसानों के खाने के योग्य नहीं हैं।

और फ़रमाया कि जब हमें इनकी ख़ुशबू पसंद नहीं और इसमें स्वाद बदला हुआ लग रहा है। इसका स्वाद भी और बू ऐसी आ रही है जो सहन करना मुश्किल है तो मेहमानों को कैसे पसंद आएगी? इसलिए यह नहीं हो सकता कि जो चीज़ मुझे पसंद नहीं, मैं मेहमानों को खिला दूँ। इसलिए इसको ढाब में फेंक दो और बर्बाद कर दो, वहाँ जानवर खा लेंगे।

(माख़ूज़ अज़ रिवायात-ए-सहाबा-ए-अहमद, जिल्द 1, पृष्ठ 103)

यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सावधानी थी। इसलिए खाना पकाने की ड्यूटी वाले जो कार्यकर्ता हैं, उन्हें भी सावधानी करनी चाहिए कि इन दिनों में, खास तौर पर आजकल क्योंकि गर्मी का मौसम है, जैसा कि मैंने कहा, खाने का प्रबंध ऐसा होना चाहिए कि खाना सही तरह सुरक्षित रहे और देर तक पड़ा न रहे। खास तौर पर दाल आदि, जिसमें जल्दी सड़ांध पैदा हो जाती है, उसे देर तक रखकर मेहमानों को न खिलाएँ। इसका ख़याल रखें और पहले खाने को अच्छी तरह जाँच लिया करें।

इसी तरह बाकी विभाग हैं। वहाँ भी हर विभाग के कार्यकर्ता को कोशिश करनी चाहिए कि जहाँ तक संभव हो मेहमान के आराम का ख़याल रखें। स्नानघरों की सफ़ाई का विभाग हो, ट्रैफ़िक का विभाग हो, पार्किंग का विभाग हो या सुरक्षा का विभाग हो। वहाँ सुरक्षा तो होनी चाहिए, लेकिन लोगों के साथ सावधानी और इज़्ज़त व सम्मान से पेश आएँ। सुरक्षा वाले का यह काम नहीं है कि वह गलत प्रकार का ऐसा व्यवहार करे जिससे मेहमान को तकलीफ़ हो और वह समझें कि मेरे साथ सख़्ती से बात की गई है। इसलिए हमें इन बातों का खास तौर पर ख़याल रखना चाहिए और यहाँ जलसा गाह के अंदर शांत कराने का जो प्रबंध है, उसमें भी अनुशासन बनाए रखने के लिए सावधानी से काम लें। महिलाओं की ओर भी खास तौर पर।

इसी तरह मैं मेहमानों को भी, जो यहाँ जमा हुए हैं, कहना चाहता हूँ कि हमें इस बात का जायज़ा लेना चाहिए कि जब हम सफ़र की कठिनाइयाँ सहन करके यहाँ जमा हुए हैं तो इसका एक उद्देश्य है। बेशक आजकल के सफ़र की कठिनाइयाँ और तकलीफ़ें उतनी नहीं हैं जो पुराने ज़माने में थीं, लेकिन सफ़र बहरहाल सफ़र ही है।

जो लोग यहाँ आए हैं, उनको ख़याल रखना चाहिए कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छाओं का सम्मान करते हुए जलसे के उद्देश्य को पूरा करने के लिए यहाँ आए हैं। और जब जलसे के इन तीन दिनों में शामिल हुए हैं तो इस बात को सामने रखें कि हमने जलसे के कार्यक्रमों को बाक़ायदा सुनना है और ये तीन दिन इधर-उधर बैठकर गपें मारकर या इधर-उधर घूमते हुए नहीं गुज़ार देने, बल्कि जब भी जलसे का कार्यक्रम शुरू हो, हमने तुरंत जलसे की मार्की के अंदर आ जाना है।

या जहाँ भी अतिरिक्त लोगों के लिए या कुछ विशेष स्थानों पर महिलाओं और पुरुषों और बच्चों के लिए बैठने का प्रबंध किया गया है, वहाँ बैठकर हमने सम्मान के साथ जलसा सुनना है। इसी तरह महिलाओं के लिए बच्चों के साथ बैठने के लिए जो अलग जगह बनाई गई है, वहाँ महिलाओं को भी चाहिए कि अपने बच्चों के साथ चुपचाप बैठकर जलसा सुनें। बच्चों के बीच बैठने का मतलब यह नहीं है कि महिलाएँ आपस में बातें करने लग जाएँ। जहाँ तक संभव हो कोशिश करें कि केवल बच्चे को चुप कराने या उसे बहलाने के लिए बोलना पड़े तो बोलना है। अगर छोटा बच्चा रो पड़ा है तो उसे चुप कराने के लिए कोई तरीका अपनाना है तो यह करें, लेकिन जब माताओं की आपस में बातें शुरू हो जाती हैं तो इससे बहरहाल शोर पैदा हो जाता है। यह नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे बाकी लोग परेशान होते हैं जो बैठे होते हैं और कई शिकायतें भी आती हैं कि बच्चे तो कम शोर मचाते हैं, लेकिन महिलाएँ आपस में बातें करने लग जाती हैं। वे समझती हैं कि हम बच्चों की मार्की में बैठी हैं तो हमारे लिए बातें करना जायज़ है, जबकि यह जायज़ नहीं है। यह प्रबंध इसलिए है ताकि दूसरे लोग, जिनके बच्चे साथ नहीं हैं, वे आराम से जलसा सुन सकें और स्वयं बच्चों की माताएँ भी आराम से बैठकर सुन सकें। इसलिए कोशिश यही करें कि जहाँ तक संभव हो कम से कम बात करें।

इसी तरह यद्यपि जलसे के कार्यक्रम के दौरान बाज़ार तो बंद होते हैं, लेकिन फिर भी सामान्य समय में जब बाज़ार खुले होते हैं तो वहाँ भी मेहमान अनुशासन का ख़्याल रखें

और सावधानी करें और कोई ऐसी बात न हो जिससे वहाँ का वातावरण ख़राब होता हो। सब्र और हौसले से अपनी चीज़ें खरीदने का प्रबंध करना चाहिए। कभी भीड़ हो जाती है, दुकान एक होती है, स्टॉल एक होता है और उसमें देर लग जाती है, लेकिन ऐसी स्थिति में भी लोगों को चाहिए कि

सब्र और हौसले और सहनशीलता से काम लें। तभी आप जलसे के उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कैसे अहमदी चाहते थे। इस बारे में आपने अलैहिस्सलाम फ़रमाया कि

वे लोग बनो जो तक़्वा अपनाने वाले हैं और नेकियाँ करने वाले हैं, क्योंकि बिना तक़्वा के अल्लाह तआला राज़ी नहीं होता।

(माख़ूज़ अज़ मलफ़ूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 298-299)

इसलिए आप लोग जो यहाँ आए हैं, आपका असल उद्देश्य यही होना चाहिए कि हमने अपने इस उद्देश्य को प्राप्त करना है और तक़्वा प्राप्त करना है और इसके लिए चुपचाप बैठकर जलसा सुनना है। पुरुषों ने भी और महिलाओं ने भी और जब यह उद्देश्य प्राप्त होगा तभी आप उन बातों से लाभ उठा सकेंगे जो जलसे में कही जाती हैं और जिस उद्देश्य के लिए जलसा आयोजित किया जाता है।

इसके लिए हर एक जो यहाँ आया है, एक-दूसरे से प्रेम से मिले, प्यार से मिले। सलाम को प्रचलित करें। जलसे में हर तरफ़ अस्सलामु अलैकुम का वातावरण होना चाहिए।

जलसे के कार्यक्रम समाप्त होने के बाद जब आपस में एक-दूसरे से मिलें तो प्रेम और प्यार से मिलें। अगर किसी की पुरानी नाराज़गियाँ भी हैं तो उन्हें दूर कर दें और जहाँ तक संभव हो यह कोशिश करें कि हमने कोई ऐसा काम नहीं करना जिससे वातावरण में कड़वाहट पैदा हो। कुछ लोगों में सहनशीलता नहीं होती। ऐसे भी लोग हैं। ऐसा नहीं कि सौ प्रतिशत लोग बड़े सब्र और हौसले वाले हैं। कभी-कभी लोगों में सहन करने की क्षमता बहुत कम होती है, लेकिन उनको चाहिए कि इन दिनों में तक़्वा से काम लेते हुए अपनी सहनशीलता बढ़ाएँ। अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने की कोशिश करें और व्यक्तिगत नाराज़गियों को समाप्त करें या कम से कम व्यक्तिगत नाराज़गियों को वातावरण में कड़वाहट का कारण न बनाएँ और इंतज़ामिया के लिए भी मुश्किल पैदा न करें।

हमेशा याद रखें कि जिस नेक उद्देश्य के लिए आप आए हैं, उसी को आपने पूरा करना है। अगर यह नहीं तो फिर कोई फ़ायदा नहीं होगा।

यहाँ नमाज़ों का बाक़ायदा प्रबंध तो है, लेकिन जो लोग लंबे समय तक ठहर रहे हैं, जमाअती रहने की जगहों में रह रहे हैं, जलसे के बाद भी उन्हें नमाज़ों की ओर बाक़ायदा ध्यान देना चाहिए और बाजमाअत नमाज़ पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। इन दिनों में जो यहाँ टेंटों में रह रहे हैं या मार्कियों में रह रहे हैं, उन सभी को चाहिए कि यहाँ तीन दिनों में तहज्जुद भी होती है। तहज्जुद के समय जब उठाया जाए तो उठना चाहिए। इस ओर ख़ास ध्यान दें और नमाज़ों की पाबंदी तो ख़ैर है ही।

तहज्जुद की भी ख़ास तौर पर कोशिश करनी चाहिए क्योंकि यही वह उद्देश्य है जिसके लिए आप यहाँ आए हैं। जब यह प्राप्त होगा तो आप लोग अपनी और अपनी नस्लों की ज़िंदगियाँ सँवारने वाले बन जाएँगे।

इसी तरह पार्किंग आदि की ओर भी ध्यान दिला दूँ कि पार्किंग में भी इंतज़ामिया जिस तरह मार्गदर्शन करे, उसके अनुसार कार पार्क करें और जाँच के समय जो कारों आदि की जाँच होती है, वहाँ भी अगर लंबी क़तार लग रही है तो सावधानी, सब्र और हौसले से अपनी बारी का इंतज़ार करें और जाँच करवाकर आएँ। जल्दीबाज़ी से काम न लें। मेहमानों को चाहिए कि मेज़बान के लिए या इंतज़ामिया के लिए किसी प्रकार की परेशानी का कारण न बनें।

इसी तरह मेहमानों को भी और ड्यूटी वालों को भी एक और चीज़ का ख़्याल रखना चाहिए कि खास तौर पर आजकल देश के जो हालात हैं और ग़ैरों में मुसलमानों के ख़िलाफ़ कभी-कभी जो द्वेष और दुश्मनी पाई जाती है, उसके लिए वातावरण पर नज़र रखें और सावधानी करें। किसी भी संदिग्ध चीज़ या व्यक्ति को देखकर तुरंत इंतज़ामिया से संपर्क करें और जलसे में बैठकर भी एक-दूसरे पर नज़र रखें।

इसी तरह इन दिनों में खास तौर पर क्योंकि मौसम बहुत सूखा है, पहले भी मैंने कहा था कि आग लगने का भी ख़तरा हो सकता है। इसलिए जो व्यक्तिगत या सामूहिक रहने की जगहें हैं, वहाँ किसी प्रकार की आग न जलाएँ। न माचिस की तीली जलाएँ। इसके लिए अगर ज़रूरत पड़े तो फिर इंतज़ामिया से संपर्क करके उस जगह पर चले जाएँ जहाँ उन्होंने यह प्रबंध किया हुआ है कि वहाँ अगर आग जला ली जाए तो कोई हर्ज नहीं है, लेकिन हर जगह बैठकर किसी भी प्रकार की चिंगारी से बचें और सावधानी करें, क्योंकि इसके कारण कोई दुर्घटना भी हो सकती है।

इसी तरह कल मैंने कार्यकर्ताओं को भी कहा था कि पुरानी कारों वाले भी सावधानी करें। बहुत से ऐसे मेहमान हैं जिनके पास पुरानी कारें हैं और उनके इंजन गर्म हो जाते हैं। अगर वे घास वाली जगह पर खड़ी हों तो वहाँ आग लगने का ख़तरा होता है। इसी तरह कभी-कभी कुछ कारों में से, पुरानी कारों में से, तेल टपक रहा होता है तो उनको भी सावधानी करनी चाहिए और पार्किंग के समय इंतज़ामिया को भी बता देना चाहिए कि मेरी कार में यह कमी है, इसलिए ऐसी जगह खड़ी करो जहाँ सुरक्षित रहे।

सफ़ाई का भी ख़्याल रखें। जहाँ इंतज़ामिया कोशिश करती है कि टॉयलेट आदि की सफ़ाई करे, वहाँ स्वयं भी जब स्नानघरों का इस्तेमाल करें तो उसकी सफ़ाई करके आया करें। ऐसा न हो कि पानी फ़र्श पर बह रहा हो और गंदगी पड़ी हुई हो। मेहमान को भी यह कोशिश करनी चाहिए कि हदीस के अनुसार सफ़ाई पर खास ध्यान दें, क्योंकि सफ़ाई भी ईमान का एक हिस्सा है और हम तो यहाँ आए ही ईमान बढ़ाने के लिए हैं। इसलिए सफ़ाई के पहलू को भी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

हर एक को इन दिनों में अपने आपको कार्यकर्ता समझ लेना चाहिए और सफ़ाई की ओर खास ध्यान देना चाहिए ताकि वातावरण भी साफ़ रहे।

अपने ईमान के स्तर को ऊँचा करने की ओर ध्यान दें। इन दिनों में ज़िक्र-ए-इलाही पर अधिक ज़ोर दें। खाली समय में जहाँ बैठे हैं, दुरूद शरीफ़, दुआओं और इस्तिग़फ़ार की ओर अधिक ध्यान दें। बेकार की बातें करने के बजाय ज़िक्र-ए-इलाही या धार्मिक बातचीत करें। इस तरह

इन दिनों में कुछ प्रदर्शनियाँ भी लगी हुई हैं। उन्हें देखने के लिए भी आप लोगों को जाना चाहिए और शौक़ और ध्यान से देखें। यह आपके लिए लाभदायक भी होगा। ज्ञान के लिहाज़ से भी लाभदायक है और धार्मिक दृष्टि से भी लाभदायक है।

इसलिए अगर ये बातें होंगी तो इंशाअल्लाह तआला आप जलसे से भरपूर लाभ उठाने वाले होंगे।

अल्लाह करे कि आप सभी लोग इस जलसे में हर लिहाज़ से, धार्मिक और रूहानी लिहाज़ से लाभ उठाने वाले हों। ज्ञान के लिहाज़ से लाभ उठाने वाले हों और जलसे की जो बरकतें हैं, वे हमेशा आपके जीवन का हिस्सा बनी रहें और आने वाली नस्लों के लिए भी जीवन का हिस्सा बनी रहें। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअसत का जो उद्देश्य है, उसे पूरा करने वाले भी हों।

इंशाअल्लाह शाम को जलसे का बाक़ायदा उद्घाटन होगा। इस तक़रीर को भी और बाकी जो वक्ता हैं, उनकी तक़रीरों को भी ध्यान से सुनें और उस पर अमल करने की कोशिश करें।

अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

बनी मुस्तलिक़ का युद्ध

उहद के युद्धोपरान्त मक्का में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। मक्का वालों को हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) से जो शत्रुता थी और आप[स.] के विपरीत लोगों में घृणा फैलाने के लिए देश भर में जो उपाय कर रहे थे उनकी परवाह न करते हुए मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने इस विकट संकट के समय में मक्का के निर्धनों की सहायता के लिए धन राशि एकत्र की परन्तु इस भलाई का भी मक्का वालों पर कुछ प्रभाव न हुआ तथा उनकी शत्रुता में कुछ अन्तर न आया अपितु वे शत्रुता में और भी बढ़ गए। ऐसे क़बीले भी जो इस से पूर्व मुसलमानों के साथ सहानुभूति का व्यवहार करते थे शत्रु बन गए। उन कबीलों में से एक क़बीला बनी मुस्तलिक़ का था; मुसलमानों के साथ उनके संबंध अच्छे थे, परन्तु अब उन्होंने मदीना पर आक्रमण करने की तैयारी आरम्भ कर दी। जब हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को उन की तैयारी का ज्ञान हुआ तो आपने वस्तु स्थिति मालूम करने के लिए कुछ लोग भेजे जिन्होंने वापस आकर उन सूचनाओं को सच बताया। इस पर हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि स्वयं जाकर इस नए आक्रमण का सामना करें। अतः आप ने एक सेना तैयार की तथा उसे लेकर बनू मुस्तलिक की ओर गए। जब मुसलमानों की सेना का शत्रुओं से सामना हुआ तो हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने प्रयास किया कि शत्रु युद्ध किए बिना पीछे हट जाने पर तैयार हो जाए, परन्तु उन्होंने इन्कार किया। अतः युद्ध हुआ और कुछ ही घंटों में शत्रु को पराजय का मुख देखना पड़ा।

चूंकि मक्का के काफ़िर मुसलमानों को हानि पहुँचाने पर तुले हुए थे तथा मित्र क़बीले भी शत्रु बन रहे थे इसलिए उन धोखेबाज़ों ने भी जो मुसलमानों के अन्दर मौजूद थे इस अवसर पर साहस किया कि वे मुसलमानों की ओर से युद्ध में भाग लें। कदाचित् उन का विचार था कि इस प्रकार उन्हें मुसलमानों को हानि पहुँचाने का अवसर प्राप्त हो जाएगा बनू मुसतलिक के साथ छेड़ा गया युद्ध कुछ ही घंटों में समाप्त हो गया। अतः इस युद्ध के मध्य मुनाफ़िक लोगों को उपद्रव करने का अवसर प्राप्त न हो सका परन्तु हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि बनू मुस्तलिक़ की बस्ती में कुछ दिन ठहरें। आपके अस्थायी तौर पर ठहरने के समय एक मक्का निवासी मुसलमान का एक मदीना निवासी मुसलमान से कुएं से पानी निकालने के संबंध में झगड़ा हो गया। संयोग से यह मक्का निवासी एक आज़ादी प्राप्त दास था, उसने मदीने वाले व्यक्ति को मारा जिस पर उस मदीनावासी ने अन्सार (मदीना वाले मुसलमान) को पुकारा और मक्कावासी ने मुहाजिरों (मक्का के प्रवासी) को पुकारा और इस प्रकार परस्पर उपद्रव फैल गया। किसी ने यह मालूम करने का प्रयास न किया कि मूल घटना क्या है। दोनों ओर से युवकों ने तलवारें निकाल लीं। अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल ने समझा कि ऐसा अवसर ख़ुदा की ओर से मिल गया है। उसने चाहा कि आग पर तेल डाले। उसने मदीना वालों को सम्बोधित करके कहा कि इन मुहाजिरों पर तुम्हारी सहानुभूति सीमा से अधिक बढ़ गई है और तुम्हारे सद्व्यवहार से इनके सर फिर गए हैं और ये दिन प्रतिदिन तुम्हारे सर चढ़ते जाते हैं। निकट था कि इस भाषण का वही प्रभाव होता जो अब्दुल्लाह चाहता था और झगड़ा बढ़ जाता परन्तु ऐसा न हुआ। अब्दुल्लाह ने अपने उपद्रवपूर्ण भाषण का अनुमान लगाने में ग़लती की थी तथा यह समझते हुए कि अन्सार पर इनका प्रभाव हो गया है उसने यहां तक कह दिया कि हम मदीना में वापस पहुँच लें फिर जो अत्यन्त समादृत व्यक्ति है वह अत्यन्त तिरस्कृत व्यक्ति को बाहर निकाल देगा। अत्यन्त समादृत व्यक्ति से उसका अभिप्राय स्वयं वह था और अत्यन्त तिरस्कृत व्यक्ति से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (ऐसा कहने से हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं) उसके मुख से ज्यों ही यह बात निकली मोमिनों पर उसकी वास्तविकता प्रकट हो गई। उन्होंने कहा यह साधारण बात नहीं अपितु यह शैतान का कथन है जो हमें पथभ्रष्ट करने आया है। एक युवक उठा और उसने अपने चाचा के द्वारा यह सूचना हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को पहुँचा दी। आप[स.] ने अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल और उसके साथियों को बुलाया और पूछा क्या बात हुई है? अब्दुल्लाह और उसके साथियों ने सरासर इन्कार कर दिया और कह दिया कि यह बात जो हम से सम्बद्ध की गई है हुई ही नहीं। आप[स.] ने कुछ न कहा, परन्तु सत्य बात का फैलना आरम्भ हो गया। कुछ समय के पश्चात् अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल के बेटे अब्दुल्लाह ने भी यह बात सुनी वह तुरन्त हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा हे अल्लाह के रसूल ! मेरे पिता ने आप[स.] का अपमान किया है, उसका दण्ड मृत्यु है। यदि आप यही निर्णय दें तो मैं चाहता हूँ कि आप[स.] मुझे आदेश दें कि मैं अपने पिता का वध करूँ। यदि आप[स.] किसी अन्य को आदेश देंगे और मेरा पिता उसके हाथों मारा जाएगा तो हो सकता है कि मैं उस व्यक्ति का वध करके अपने पिता का प्रतिशोध लूँ और इस प्रकार ख़ुदा तआला की अप्रसन्नता का कारण बनूं। परन्तु हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने फ़रमाया मेरा कदापि इरादा नहीं। मैं तुम्हारे पिता के साथ दया एवं सहानुभूति का व्यवहार करूँगा[1]। जब अब्दुल्लाह ने अपने पिता की बेवफ़ाई और उसके कटु शब्दों का मुहम्मद (स.अ.व.) की दयालुता और सहानुभूति से तुलना की तो उसका ईमान और बढ़ गया तथा अपने पिता के विरुद्ध उसका क्रोध भी इसी अनुपात से उन्नति कर गया। जब सेना नदी के निकट पहुँची तो उसने आगे बढ़कर अपने पिता का मार्ग रोक लिया और कहा कि मैं तुम्हें मदीना के अन्दर नहीं जाने दूँगा जब तक तुम वे शब्द वापस न ले लो जो तुम ने मुहम्मद (स.अ.व.) के विरुद्ध प्रयोग किए हैं। जिस मुख से यह बात निकली है कि ख़ुदा का नबी अपमानित है और तुम सम्मानित हो उसी मुख से तुम्हें यह बात भी कहना होगी कि ख़ुदा का नबी सम्मानित है और तुम अपमानित हो जब तक तुम यह न कहोगे, तब तक मैं तुम्हें आगे कदापि न जाने दूँगा। अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल स्तब्ध रह गया तथा भयभीत हुआ और कहने लगा हे मेरे बेटे ! मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ। मुहम्मद (स.अ.व.) सम्मानित है और मैं अपमानित हूँ। नौजवान अब्दुल्लाह ने इस पर अपने पिता को छोड़ दिया[2]।

मदीना पर समस्त अरबों की चढ़ाई ख़न्दक का युद्ध

इस से पूर्व यहूदयों के दो क़बीलों का वर्णन किया जा चुका है। जो युद्ध, उपद्रव, उत्पात, हिंसा करने की योजनाओं के कारण मदीना से निकाल दिए गए थे, उनमें से बनू नज़ीर का कुछ भाग तो शाम की ओर पलायन कर गया था और कुछ भाग मदीना से उत्तर की ओर ख़ैबर नामक एक नगर की ओर पलायन कर गया था। ख़ैबर अरब में यहूदयों का एक बहुत बड़ा केन्द्र था और एक सुरक्षित दुर्ग के समान नगर था। बनू नज़ीर यहाँ पहुँच कर मुसलमानों के विरुद्ध अरबों को उत्तेजित करने

लगा। मक्का निवासियों के हृदयों में पहले ही प्रतिहिंसा की ज्वाला धधक रही थी उसे और अधिक प्रज्वलित करने के लिए किसी अन्य उत्तेजना की आवश्यकता न थी। इसी प्रकार ग़तफ़ान नामक नज्द का क़बीला जो अरब क़बीलों में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखता था वह भी मक्का वालों की मित्रतावश इस्लाम की शत्रुता में अग्रसर रहता था। अब यहूद ने क़ुरैश और ग़तफ़ान को उत्तेजित करने के अतिरिक्त बनू सलीम और बनू असद दो अन्य शक्तिशाली क़बीलों को भी मुसलमानों के विरुद्ध भड़काना आरम्भ कर दिया और इसी प्रकार बनू असद नामक कबीला जो यहूद का मित्र था उसे भी मक्का के काफ़िरों का साथ देने के लिए तैयार किया। एक लम्बी तैयारी के पश्चात् अरब के शक्तिशाली क़बीलों को मिलाकर एक सामान्य एकता की नींव रख दी गई जिसमें मक्का निवासियों के अतिरिक्त आस-पास के क़बीले तथा नज्द और मदीना से उत्तर की दिशा में आबाद क़बीले भी शामिल थे तथा यहूद भी शामिल थे। इन सभी कबीलों ने संगठित होकर मदीना पर आक्रमण करने के लिए एक विशाल सेना जुटा ली। यह शवाल माह, 5 हिज्री अन्तिम फरवरी-मार्च 627 ई. की घटना है। विभिन्न इतिहासकारों ने इस सेना का अनुमान दस हज़ार से लेकर चौबीस हज़ार तक लगाया है परन्तु स्पष्ट है कि समस्त अरब के एकत्र हो जाने का परिणाम केवल दस हज़ार सैनिक नहीं हो सकता। निश्चय ही चौबीस हज़ार वाला अनुमान अधिक उचित है और यदि कुछ नहीं तो यह सेना अठारह-बीस हज़ार की संख्या में अवश्य रही होगी। मदीना एक साधारण क़स्बा था, इस क़स्बे के विरुद्ध समस्त अरब का आक्रमण कोई साधारण आक्रमण नहीं था। मदीने के पुरुष एकत्र करके (जिनमें वृद्ध, युवा और बच्चे भी सम्मिलित हों) मात्र तीन हज़ार लोग निकल सकते थे। इसके विपरीत शत्रु-सेना बीस और चौबीस हज़ार के लगभग थी। फिर वे सब फ़ौजी लोग थे, जवान और युद्ध के योग्य थे; क्योंकि जब शहर में रह कर सुरक्षा का प्रश्न खड़ा होता है तो उसमें बूढ़े और बच्चे भी सम्मिलित हो जाते हैं, परन्तु जब सुदूर स्थान पर सेना चढ़ाई करने जाती है तो उसमें केवल जवान और शक्तिशाली लोग होते हैं। अतः यह बात निश्चित है कि काफ़िरों की सेना में बीस या पच्चीस हज़ार जितने भी लोग थे वे सब के सब शक्तिशाली युवक और अनुभवी सैनिक थे परन्तु मदीना के समस्त पुरुषों की संख्या बच्चों और विकलांगों को मिलाकर तीन हज़ार के लगभग थी। स्पष्ट है कि इन बातों को दृष्टिगत रखते हुए यदि मदीना की सेना की संख्या तीन हज़ार समझी जाए तो शत्रु की संख्या चालीस हज़ार मान लेना चाहिए और यदि शत्रु की सेना की संख्या बीस हज़ार समझी जाए तो मदीने की सेना की संख्या को केवल डेढ़ हज़ार समझना चाहिए। जब इस सेना के एकत्र होने की सूचना रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को पहुँची तो आप[स.] ने सहाबा को एकत्र करके परामर्श किया कि इस अवसर पर क्या करना चाहिए। सहाबा[रज़ि.] में से सलमान फ़ारसी[रज़ि.] जो फ़ारस के सर्वप्रथम मुसलमान थे से पूछा कि तुम्हारे देश में ऐसे अवसर पर क्या करते हैं। उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! जब नगर असुरक्षित हो और सैनिक थोड़े हों तो हमारे देश के लोग ख़न्दक (खाई) खोदकर उसके अन्दर घेराबन्द हो जाया करते हैं। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उनके इस प्रस्ताव को पसन्द किया। मदीना के एक ओर टीले थे दूसरी ओर ऐसे मुहल्ले थे जिन के मकान एक दूसरे से जुड़े हुए थे तथा शत्रु केवल कुछ गलियों में से गुज़र कर आ सकता था, तीसरी ओर कुछ मकान, कुछ बाग़ और कुछ दूरी पर यहूदी क़बीला बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे। यह कबीला चूंकि मुसलमानों से एकता की संधि कर चुका था इसलिए यह दिशा भी सुरक्षित समझ ली गई थी, चौथी ओर खुला मैदान था जिसकी ओर से ख़तरा हो सकता था। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि इस खुले मैदान की ओर खन्दक (खाई) बना दी जाए ताकि शत्रु अचानक शहर में प्रवेश न कर सके। अतः आप[स.] ने दस-दस गज़ का भाग दस-दस लोगों को खोदने के लिए दे दिया और इस प्रकार आप[स.] ने एक मील लम्बी खाई खुदवाई। जब खाई खोदी जा रही थी तो भूमि में एक ऐसा पत्थर निकला जो लोगों से किसी प्रकार से भी टूट नहीं रहा था। सहाबा[रज़ि.] ने इस बात की सूचना रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को दी। अतः आप[स.] वहाँ स्वयं गए, अपने हाथ से कुदाल पकड़ा और ज़ोर से उस पत्थर पर मारा; कुदाल के पड़ने से उस पत्थर में से प्रकाश निकला, आप[स.] ने फ़रमाया अल्लाहो अकबर। फिर दोबारा आप ने कुदाल मारा तो फिर प्रकाश निकला, आप ने फिर फ़रमाया अल्लाहो अकबर। फिर आप[स.] ने तीसरी बार कुदाल मारा तो फिर प्रकाश निकला और साथ ही पत्थर टूट गया। इस अवसर पर पुनः आप ने फ़रमाया अल्लाहो अकबर। सहाबा[रज़ि.] ने आप से पूछा हे अल्लाह के रसूल ! आप ने तीन बार अल्लाहो अकबर क्यों फ़रमाया? आप[स.] ने फ़रमाया पत्थर पर कुदाल पड़ने से तीन बार जो प्रकाश निकला, तीनों बार ख़ुदा ने मुझे इस्लाम की भावी उन्नति के दृश्य दिखाए। पहली बार के प्रकाश में क़ैसर के शासन के अधीन शाम के महल दिखाए गए तथा उनकी कुंजियां मुझे दी गईं। दूसरी बार के प्रकाश में मुझे मदायन के श्वेत महल दिखाए गए तथा फ़ारस के शासन की कुंजियां मुझे दी गईं, तीसरी बार के प्रकाश में मुझे सनआ के दरवाज़े दिखाए गए, यमन के राज्य की मुझे कुंजियां दी गईं। अतः तुम ख़ुदा तआला के वादों पर विश्वास रखो, शत्रु तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता[1]। ये थोड़े से लोग फ़ौजी नियमों के अनुसार इतनी लम्बी ख़न्दक तो नहीं खोद सकते थे अतः यह ख़न्दक इतना ही लाभ दे सकती थी कि शत्रु अचानक अन्दर न घुस सके अन्यथा शत्रु के लिए इस ख़न्दक़ से पार होना असंभव नहीं था। अतः अब जो घटनाएँ वर्णन होंगी उन से ऐसा ही सिद्ध होता है। शत्रु ने भी मदीना की परिस्थितियों को दृष्टि में रख कर इसी ओर से आक्रमण करने की योजना बनाई हुई थी। अतः शत्रु की विशाल सेना इसी ओर से मदीने में प्रवेश करने कि लिए आगे बढ़ी। रसूले करीम (स.अ.व.) को इसकी सूचना मिली तो आपने भी कुछ लोगों को शहर के अन्य भागों की सुरक्षा के लिए नियुक्त कर दिया तथा शेष लोगों को साथ लेकर जो बारह सौ के लगभग थे ख़न्दक की सुरक्षा के लिए गए।

ख़न्दक के युद्ध के समय इस्लामी सेना की वास्तविक संख्या?

यहां सेना की संख्या के बारे में इतिहासकारों में अत्यधिक मतभेद हैं। कुछ लोगों ने इस सेना की संख्या तीन हज़ार लिखी है, कुछ ने बारह-तेरह सौ और कुछ ने सात-सौ। यह इतना बड़ा मतभेद है कि जिसकी व्याख्या प्रायः कठिन मालूम होती है तथा इतिहासकार इसे हल नहीं कर सके परन्तु मैंने इस की वास्तविकता को पा लिया है और वह यह कि तीनों प्रकार की रिवायतें सही हैं। यह बताया जा चुका है कि उहद के युद्ध में मुनाफ़िक लोगों के वापस आ जाने के पश्चात् मुसलमानों की सेना केवल सात सौ सदस्यों पर आधारित थी। अहज़ाब का युद्ध इसके दो वर्ष पश्चात् हुआ है तथा इस अवधि में कोई बड़ा क़बीला इस्लाम को स्वीकार करके मदीने में आकर आबाद नहीं हुआ। अतः सात सौ लोगों का सहसा तीन हज़ार हो जाना अनुमान के विपरीत है। दूसरी ओर यह बात भी युक्ति संगत नहीं कि उहद के दो वर्ष पश्चात् तक इस्लाम की उन्नति के बावजूद युद्ध करने के योग्य मुसलमान इतने ही रहे जितने उहद युद्ध के समय थे। अतः इन दोनों समीक्षाओं के बाद वह

रिवायत ही उचित मालूम होती है कि लड़ने के योग्य मुसलमान अहज़ाब युद्ध के समय बारह सौ थे। अब रहा यह प्रश्न कि फिर किसी ने तीन हज़ार और किसी ने सात सौ क्यों लिखा है, तो इसका उत्तर यह है कि ये दो रिवायतें (वर्णन) पृथक-पृथक परिस्थितियों और दृष्टिकोणों के अन्तरगत वर्णन की गई हैं। अहज़ाब युद्ध के तीन भाग थे। एक भाग वह था जब अभी शत्रु मदीने के सामने नहीं आया था और खाई (ख़न्दक़) खोदी जा रही थी। इस कार्य में मिट्टी ढोने का कार्य कम से कम बच्चे भी कर सकते थे और कुछ स्त्रियाँ भी इस कार्य में सहयोग दे सकती थीं। अतः जब तक खाई खोदने का कार्य जारी रहा, मुसलमान सेना की संख्या तीन हज़ार थी, परन्तु इस में बच्चे भी सम्मिलित थे तथा सहाबी स्त्रियों की तेजस्वी भावना देख कर हम कह सकते हैं कि इस संख्या में कुछ स्त्रियाँ भी सम्मिलित रही होंगी जो खाई खोदने का कार्य तो नहीं करती होंगी, परन्तु अतिरिक्त कार्यों में भाग लेती होंगी। यह मेरा विचार ही नहीं, इतिहास से भी इस विचार की पुष्टि होती है। अतः लिखा है कि जब खाई खोदने का समय आया सब लड़के एकत्र कर लिए गए तथा सभी पुरुष चाहे वे बड़े थे या बच्चे; खाई खोदने अथवा उसमें सहायता देने का कार्य करते थे। फिर जब शत्रु आ गया और युद्ध आरम्भ हुआ तो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उन समस्त लड़कों को जो पन्द्रह वर्ष के थे उन्हें अनुमति दी कि चाहे ठहरें चाहे चले जाएँ।

इस रिवायत से विदित होता है कि खाई खोदते समय मुसलमानों की संख्या अधिक थी तथा युद्ध के समय कम हो गई क्योंकि अवयस्कों को वापस चले जाने का आदेश दे दिया गया था। अतः जिन रिवायतों में तीन हज़ार की चर्चा है वह खाई खोदने के समय की संख्या बताती हैं जिसमें छोटे बच्चे भी सम्मिलित थे तथा जैसा कि मैंने अन्य युद्धों को देखते हुए अनुमान द्वारा जो परिणाम निकाला है कुछ स्त्रियाँ भी थीं परन्तु बारह सौ की संख्या उस समय की है जब युद्ध प्रारम्भ हो गया और केवल वयस्क पुरुष रह गए। अब रहा यह प्रश्न कि तीसरी रिवायत जो सात सौ सिपाही बताती है क्या वह भी उचित है?

इस का उत्तर यह है कि यह रिवायत इतिहासकार इब्ने इस्हाक़ ने लिखी है जो विश्वसनीय इतिहासकार है तथा इब्ने हज़्म जैसे प्रकाण्ड विद्वान ने उस की भरपूर पुष्टि की है। अतः इसके संबंध में भी सन्देह नहीं किया जा सकता तथा उसकी पुष्टि इस प्रकार भी होती है कि इतिहास की गहरी छान-बीन से विदित होता है कि जब युद्ध के समय बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों की सेना में जा मिले तथा उन्होंने यह इरादा किया कि मदीना पर अचानक आक्रमण कर दे परन्तु उनकी दूषित भावनाओं का रहस्य प्रकट हो गया तो मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने मदीना की उस ओर की सुरक्षा आवश्यक समझी जिस ओर बनू क़ुरैज़ा थे तथा जिस ओर इस विचार के अनुसार सुरक्षा की उपेक्षा की गई थी कि बनू क़ुरैज़ा हमारे साथी हैं। ये लोग शत्रु को उस ओर से न आने देंगे। अतः इतिहास द्वारा ज्ञात होता है कि जब बनू क़ुरैज़ा के द्रोह का पता लगा, तो चूंकि बनू क़ुरैज़ा के विश्वास पर स्त्रियाँ उस क्षेत्र में रखी गई थीं। जिस ओर बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे और असुरक्षित थीं; रसूले करीम (स.अ.व.) ने अब उनकी सुरक्षा आवश्यक समझी तथा मुसलमानों के दो सैन्य दल तैयार करके स्त्रियों के ठहरने के दोनों भागों पर नियुक्त कर दिए। मुस्लिमा बिन असलम[रज़ि.] को दो सौ सहाबा देकर एक स्थान पर नियुक्त किया और ज़ैद बिन हारिस[रज़ि.] को तीन सौ सहाबा देकर दूसरे स्थान पर नियुक्त किया तथा आदेश दिया कि थोड़े-थोड़े समय पर उच्च स्वर में अल्लाहो अकबर का उदघोष करते रहें ताकि ज्ञात होता रहे कि स्त्रियाँ सुरक्षित हैं। इस रिवायत से हमारी यह कठिनाई कि इब्ने इस्हाक़ ने सात सौ सैनिक ख़न्दक़ युद्ध में क्यों बताए हैं हल हो जाती है क्योंकि बारह सौ सैनिकों में से जब पाँच सौ सिपाही स्त्रियों की सुरक्षा के लिए भेज दिए गए तो बारह सौ की सेना मात्र सात सौ रह गई तथा इस प्रकार ख़न्दक़ युद्ध के सैनिकों की संख्या के बारे में इतिहासों में बहुत मतभेद पाया जाता है उसका निवारण हो गया।

सारांश यह कि इस महान संकट के समय ख़न्दक़ की सुरक्षा के लिए रसूले करीम (स.अ.व.) के पास केवल सात सौ लोग थे। इस में कोई सन्देह नहीं कि आप सने ख़न्दक खोदी थी परन्तु फिर भी इतनी बड़ी सेना के ख़न्दक़ के पार से रोकना भी इतने कम लोगों के लिए असंभव था परन्तु ख़ुदा तआला की अलौकिक सहायता के सहारे यह मुट्ठी भर सेना ईमान और विश्वास के साथ ख़न्दक़ के पीछे शत्रु की विशाल सेना की प्रतीक्षा करने लगी और स्त्रियाँ तथा बच्चे दो अलग-अलग स्थानों पर एकत्र कर दिए गए। शत्रु जब ख़न्दक़ तक पहुँचा तो चूंकि यह अरबों के लिए बिल्कुल नई बात थी और वे इस प्रकार के युद्ध के लिए तैयार न थे। उन्होंने ख़न्दक़ के सामने अपने शिविर लगा दिए और मदीने में प्रवेश करने के लिए उपाय सोचने लगे।

बनू क़ुरैज़ा का विश्वासघात

चूंकि मदीना का एक ओर का पर्याप्त भाग ख़न्दक़ से सुरक्षित था और दूसरी ओर कुछ पर्वतीय टीले, पक्के मकान तथा कुछ बाग़ आदि थे, इसलिए सेना तुरन्त आक्रमण नहीं कर सकती थी। अतः उन्होंने परामर्श करके यह उपाय किया कि किसी प्रकार यहूद का तीसरा क़बीला जो अभी मदीना में शेष था, जिसका नाम बनू क़ुरैज़ा था अपने साथ मिला लिया जाए और इस के द्वारा मदीना तक पहुँचने का मार्ग खुल जाए। अतः परामर्श के पश्चात् हुय्यि इब्ने अख़तब को जो बनू नज़ीर का सरदार था जिसको देश से निकाला जा चुका था और जिसके उपद्रव और उत्पात के कारण सम्पूर्ण अरब एकत्र होकर मदीना पर आक्रमणकारी हुआ था, काफ़िरों की सेना के सेनापति अबू सुफ़यान ने इसे इस बात पर नियुक्त किया कि जैसे भी हो बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिला लो। अतः हुय्यिइब्ने अख़तब यहूदियों के क़िलों की ओर गया। उसने बनू क़ुरैज़ा के सरदारों से मिलना चाहा। पहले तो उन्होंने मिलने से इन्कार कर दिया परन्तु जब उसने उन्हें समझाया कि इस समय सारा अरब मुसलमानों का विनाश करने के लिए आया है तथा यह बस्ती समस्त अरब का मुकाबला किसी भी प्रकार नहीं कर सकती। इस समय जो सेना मुसलमानों के मुकाबले पर खड़ी है उसे सेना नहीं कहना चाहिए अपितु ठाठे मारने वाला समुद्र कहना चाहिए। इस प्रकार अन्ततः उस ने बनू क़ुरैज़ा को ग़द्दारी और संधि भंग करने पर तैयार कर दिया तथा यह निर्णय हुआ कि काफ़िरों की सेना सामने की ओर से ख़न्दक़ पार करने का प्रयास करे और जब वह ख़न्दक पार करने में सफल हो जाएगी तो बनू क़ुरैज़ा की दूसरी ओर से मदीने के उस भाग पर आक्रमण कर देंगे जहाँ स्त्रियाँ और बच्चे हैं जो बनू क़ुरैज़ा पर विश्वास करके असुरक्षित छोड़ दिए गए थे। इस प्रकार मुसलमानों का मुकाबला करने की शक्ति पूर्णतया कुचली जाएगी तथा एक ही बार में मुसलमान पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे सब मार दिए जाएँगे। यह निश्चित बात है कि यदि इस योजना में काफ़िरों को कुछ सफलता भी मिल जाती तो मुसलमानों के लिए सुरक्षा का कोई स्थान शेष नहीं रहता था। बनू क़ुरैज़ा मुसलमानों के समझौते के अनुसार मित्र थे और यदि वे इस खुले युद्ध में

सम्मिलित न भी होते तब भी मुसलमान यह आशा करते थे कि उनकी ओर से होकर मदीने पर कोई आक्रमण नहीं कर सकेगा। यही कारण था कि उनकी ओर का भाग बिल्कुल असुरक्षित छोड़ दिया गया था। बनू क़ुरैज़ा और काफ़िरों ने इस परिस्थिति के उपलक्ष्य यह निर्णय कर दिया था कि जब बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों के साथ मिल गए तो वे प्रत्यक्ष रूप से काफ़िरों की सहायता न करें, ताकि ऐसा ने हो कि मुसलमान मदीने के इस भाग की सुरक्षा की भी कोई व्यवस्था कर लें जो बनू क़ुरैज़ा के क्षेत्र के साथ लगता था। यह योजना अत्यन्त भयानक थी। मुसलमानों को असावधान रखते हुए बनू क़ुरैज़ा का ऐसी आपात स्थिति में शत्रु के साथ जा मिलना, जबकि शत्रु की सेना का इस्लामी सेना पर भयानक आक्रमण हो रहा हो मदीने की उस ओर की सुरक्षा को जिस ओर बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे बिल्कुल असंभव बना दिया था। मुसलमानों पर दोनों ओर से आक्रमण की संभावना के पश्चात् मक्का की सेना ने ख़न्दक़ पर आक्रमण प्रारम्भ किया। पहले कुछ दिन तो उनकी समझ में न आया कि वे ख़न्दक़ को किस प्रकार पार करें परन्तु दो चार दिन के पश्चात् उन्होंने यह उपाय निकाला कि धनुषधारी ऊँचे स्थानों पर खड़े होकर उन मुसलमान दलों पर वाण बरसाना आरम्भ कर देते थे जो ख़न्दक़ की सुरक्षा के लिए ख़न्दक़ के साथ-साथ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बैठाए गए थे। जब तीरों की बौछार के कारण मुसलमान पीछे हटने पर विवश हो जाते तो उच्च कोटि के घुड़सवार ख़न्दक फांदने का प्रयास करते। विचार किया गया कि इस प्रकार के निरन्तर आक्रमणों के परिणामस्वरूप कोई न कोई ऐसा स्थान निकल आएगा जहाँ से पैदल सेना अधिक संख्या में ख़न्दक़ पार कर सकेगी। ये आक्रमण निरन्तर इतनी अधिकता के साथ किए जाते थे कि कई बार मुसलमानों को सांस लेने का भी अवसर नहीं मिलता था। अतः एक दिन आक्रमण इतना भीषण हो गया कि मुसलमानों की कुछ नमाज़ें समय पर अदा न हो सकीं, जिसका रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को इतना आघात पहुँचा कि आप ने फ़रमाया ख़ुदा काफ़िरों को दण्ड दे, उन्होंने हमारी नमाज़ें नष्ट कीं[1]। यद्यपि मैंने यह वृत्तान्त शत्रुओं के आक्रमणों की भयंकरता प्रकट करने के लिए वर्णन किया है परन्तु इस से मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के चरित्र पर अत्यधिक प्रकाश पड़ता है और ज्ञात होता है कि आप के लिए संसार में सर्वप्रिय वस्तु ख़ुदा तआला की उपासना थी। जब कि शत्रु मदीना को चारों ओर से घेरे हुआ था, जब कि मदीना के पुरुष तो पृथक रहे स्त्रियों और बच्चों के प्राण भी ख़तरे में थे। जब हर समय मदीने के लोगों का हृदय धड़क रहा था कि शत्रु किसी ओर से मदीने के अन्दर प्रेवश न कर जाए, उस समय भी मुहम्मद रसूलुल्लाह की इच्छा यही थी कि ख़ुदा तआला की इबादत यथा समय उचित प्रकार से अदा हो जाए। मुसलमानों की उपासना यहूदियों, ईसाइयों और हिन्दुओं की भांति सप्ताह में किसी एक दिन नहीं हुआ करती अपितु मुसलमानों की इबादत (उपासना) एक दिन में पाँच बार होती है। ऐसी ख़तरनाक अवस्था में तो दिन में एक बार भी नमाज़ अदा करना मनुष्य के लिए कठिन है कहाँ, पाँच समय और वह भी यथाविधि नियमपूर्वक बाजमाअत (सामूहिक तौर पर) नमाज़ अदा की जाए, परन्तु इन विकट परिस्थितियों में भी मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ये पाँचों नमाज़ें निर्धारित समय पर अदा करते थे और यदि एक दिन शत्रु के भीषण आक्रमण के कारण आपस. अपने रब्ब का नाम सन्तोष और शान्ति से यथा समय ने ले सके तो आपको अत्यधिक मानसिक कष्ट पहुँचा। उस समय सामने से शत्रु आक्रमण कर रहा था तथा पीछे से बनू क़ुरैज़ा इस घात में थे कि कोई अवसर मिल जाए तो मुसलमानों में सन्देह पैदा किए बिना वे मदीने के अन्दर घुस कर स्त्रियों और बच्चों का वध कर दें। अतः एक दिन बनू क़ुरैज़ा ने एक जासूस भेजा ताकि वह मालूम करे कि स्त्रियां और बच्चे अकेले ही हैं अथवा पर्याप्त सिपाही सुरक्षा पर नियुक्त हैं। जिस विशेष घेरे में वे विशेष-विशेष ख़ानदान जिन्हें शत्रु से बहुत ख़तरा था एकत्र कर दिए गए थे उसके निकट एक जासूस ने आकर घूमना और चारों ओर से निरीक्षण करना प्रारम्भ किया कि मुसलमान सैनिक कहीं आस-पास छुपे हुए तो नहीं। वह अभी इसी टोह में लगा था कि रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की फूफी हज़रत सफ़ियारज़ि. ने उस देख लिया। संयोग से उस समय वहाँ एक ही मुसलमान मौजूद था और वह भी बीमार था। हज़रत सफ़ियारज़ि. ने उस से कहा कि यह व्यक्ति काफी समय से स्त्रियों के क्षेत्र में मंडला रहा है और जाने का नाम नहीं लेता तथा चारों ओर देखता फिरता है। यह निश्चत ही जासूस है; तुम इसका मुकाबला करो, ऐसा न हो कि शत्रु परिस्थितियों पर पूर्णरूप से अवगत हो कर इधर आक्रमण कर दे। इस रोगग्रस्त सहाबी ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया, तब हज़रत सफ़ियारज़ि. ने स्वयं एक बड़ा बांस लेकर उस व्यक्ति का मुकाबला किया तथा अन्य स्त्रियों की सहायता से उसे मारने में सफल हो गईं। छान-बीन करने पर ज्ञात हुआ कि वह यहूदी बनू क़ुरैज़ा का जासूस था। अतः मुसलमान और अधिक घबराए तथा समझे कि अब मदीने का यह भाग भी सुरक्षित नहीं है परन्तु सामने की ओर से शत्रु का इतना दबाव था कि वे इस ओर की सुरक्षा की कोई व्यवस्था भी नहीं कर सकते थे। इसके बावजूद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने स्त्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी और जैसा कि वर्णन किया जा चुका है बारह सौ सैनिकों में से पाँच सौ को स्त्रियों की सुरक्षा के लिए शहर में नियुक्त कर दिया तथा ख़न्दक़ की सुरक्षा तथा अठारह-बीस हज़ार सेना के मुकाबले के लिए केवल सात सौ सैनिक रह गए। इस परिस्थिति में कुछ मुसलमान घबरा कर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के पास आए और कहा हे अल्लाह के रसूल ! परिस्थितियां नितान्त भयानक रूप धारण कर चुकी हैं अब प्रकट रूप से मदीने के बचने की कोई आशा दिखाई नहीं देती; आपस. ख़ुदा तआला से विशेष तौर पर दुआ करें और हमें भी कोई दुआ सिखाएँ, जिसके पढ़ने से हम पर ख़ुदा तआला की कृपा हो। आपस. ने फ़रमाया तुम लोग घबराओ नहीं, तुम ख़ुदा तआला से यह दुआ किया करो कि तुम्हारे दोषों पर पर्दा डाले, तुम्हारे हृदयों को दृढ़ता प्रदान करे तथा घबराहट को दूर करे। फिर आपस. ने स्वयं भी इस प्रकार दुआ की

اَللّٰھُمَّ مُنزل الْکِتٰبِ سَرِیْع الْحِساب اھْزِمِ الْاَحْزَاب اَللّٰھُمَّ اھْزِمْھُمْ وانصرنا علیھم وَزلزلھُمْ

और इसी प्रकार यह दुआ की

یَاصَرِیْخَ الْمَکْرُوْبِیْنَ یَامُجِیْب الْمُضْطَرِّیْنَ اکْشِفْ ھَمِّیْ وَغَمِّیْ وَکِرْبِیْ فَاِنَّکَ

تَرٰی مَانزل بی وَ بِاَصْحَالِیْ

हे अल्लाह ! जिसने मुझ पर क़ुर्आन करीम उतारा है, जो अपने बन्दों से अति शीघ्र हिसाब ले सकता है यह गिरोह जो संगठित होकर आए हैं उन्हें पराजित कर दे। अल्लाह! मैं पुनः प्रार्थना करता हूँ कि तू उन्हें पराजित कर तथा हमें विजय प्रदान कर तथा उन के इरादों को छिन्न-भिन्न कर दे, हे विवश लोगों की पुकार सुनने वाले, हे व्याकुल लोगों की गुहार सुनने वाले! मेरी व्याकुलता और चिन्ता का निवारण कर, क्योंकि तू उन संकटों को जानता है जिनसे मैं और मेरे साथियों का सामना है।

शेष

★ ★ ★

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऑस्ट्रेलिया दौरा 2013

(भाग -5)

अक्टूबर 2013 ई. , गुरुवार

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सुबह चार बजे मस्जिद मसरूर में तशरीफ़ लाए और नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया की विभिन्न जमाअतों से प्राप्त होने वाली डाक और फैक्स देखे और हिदायतों से नवाज़ा तथा हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

एक बजे हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद में तशरीफ़ लाए और नमाज़ ज़ुहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

व्यक्तिगत व पारिवारिक मुलाक़ातें

कार्यक्रम के अनुसार छह बजे हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और पारिवारिक मुलाक़ातों का कार्यक्रम शुरू हुआ। आज शाम के इस सत्र में 56 परिवारों के 234 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। आज ब्रिस्बेन (Brisbane) की धरती पर बसे कुछ शहीदाने अहमदियत के परिवारों और असीराने राहे मौला तथा उनके परिवारों ने भी अपने प्यारे आका से मुलाक़ात का सम्मान पाया। सभी ने अपने प्यारे आका से बेहद प्यार पाया और हज़ूर-ए-अनवर की दुआएँ प्राप्त कीं और हर एक ने अपने आका के साथ तस्वीर बनवाई तथा हज़ूर-ए-अनवर से उपहार भी प्राप्त किए। हज़ूर-ए-अनवर ने शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को प्यार से कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों ने चॉकलेट प्राप्त कीं। हर एक अपने प्यारे आका से अपार स्नेह प्राप्त करके अपने घरों को लौटा। इन मुलाक़ात करने वालों में से कुछ की तो अपने प्यारे आका से अपनी ज़िंदगी में पहली मुलाक़ात थी। यह मुलाक़ात उन सभी के लिए अपार बरकतों और दिल के सुकून का कारण बनी।

मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम रात आठ बजकर पैंतीस मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद तशरीफ़ ले आए और कार्यक्रम के अनुसार तक़रीब आमीन का आयोजन हुआ।

तक़रीब आमीन

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक-एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

बच्चियों में से अज़ीज़ा ताहिरा नदीम, उम्मतुल अला, उम्मतुस्सबूर, अस्मारा ज़फ़र, माहम मुबश्शिर, मनाहिल अहमद, क़ुर्रतुल ऐन ज़फ़र, सजीलह हसन, सहरिश हसन, शाफ़िआ मिर्ज़ा।

और बच्चों में से अज़ीज़म आसिफ़ अहमद, अब्दुस्सलाम, अफ़्फ़ान महमूद ज़िया, अफ़नान दानियाल राना, हारिस मलिक, हस्सान अहमद, मुसव्विर अहमद मिर्ज़ा, सबूर अहमद, सालिक शहज़ाद, समर अहमद, बिलाल अहमद, हसन महमूद ज़िया और अज़ीज़म आतिफ़ अहमद ने इस तक़रीब आमीन में शामिल होने का सौभाग्य पाया।

तक़रीब आमीन के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

ब्रिस्बेन के पहले अहमदी

ऑस्ट्रेलिया की जमाअत ब्रिस्बेन (Brisbane) का जब भी इतिहास लिखा जाएगा तो उस इतिहास की शुरुआत ब्रिस्बेन की धरती पर बसने वाले सबसे पहले अहमदी, मुकर्रम अली बहादुर ख़ान साहब, से होगी।

आप आज से लगभग 100 वर्ष पहले बीसवीं सदी के आरंभ में ऑस्ट्रेलिया आए थे और क्वींसलैंड स्टेट के शहर ब्रिस्बेन में रहते थे। आपकी तब्लीग़ से एक नव-मुस्लिम भी अहमदियत में दाख़िल हुआ, जिसका इस्लामी नाम रशीद बर्ड रखा गया।

मुकर्रम अली बहादुर ख़ान साहब एक फ़िदाई अहमदी थे और तब्लीग़-ए-अहमदियत में सक्रिय थे। आपने आधी सदी से अधिक समय ब्रिस्बेन में गुज़ारा और इस अवधि में किसी और अहमदी के ब्रिस्बेन (क्वींसलैंड) आने का उल्लेख नहीं मिलता।

आपने इस पचास वर्ष के समय में अकेले अहमदियत का दीपक जलाए रखा और मृत्यु के समय भी अपनी क़ब्र की पेशानी पर यह लिखवा गए कि यह ब्रिस्बेन की धरती पर रहने वाले किसी अहमदी की क़ब्र है, ताकि शायद कभी कोई यहाँ आए और उसे पता चले कि यहाँ एक अहमदी दफ़्न है।

आपकी क़ब्र का शिलालेख ही था, जिसके कारण यहाँ आपकी मौजूदगी का पता चला। आपकी क़ब्र की खोज एक बार संयोग से हुई।

जमाअत ब्रिस्बेन के सदर मुकर्रम अब्दुल लतीफ़ मक़बूल साहब एक दिन माउंट ग्रावैट (Mount Grawatt) क़ब्रिस्तान के मुस्लिम हिस्से में थे। जहाँ आपको दो क़ब्रों पर अहमदिया मुस्लिम (Ahmadiyya Muslim) लिखा दिखाई दिया। बाद में दूसरे अहमदी मित्र भी इस क़ब्रिस्तान पहुँचे और इन दोनों क़ब्रों को देखा। ये दोनों क़ब्रें एक-दूसरे के साथ हैं और एक जैसी हैं और इन दोनों क़ब्रों पर निम्नलिखित शब्द खुदे हुए हैं।

Allah O Akbar
God Greatest of All
A.B. Khan
Ahmadiyya Muslim
Died 13th May 1955
Aged 83 Years

दूसरी क़ब्र अली बहादुर ख़ान साहब की पत्नी मोहतरमा मार्गरेट ख़ान साहिबा की है। मार्गरेट ख़ान साहिबा की क़ब्र पर लिखा हुआ है:

Allah O Akbar
God Greatest of All
Margaret Khan
Ahmadiyya Muslim
Died 12th February 1948
Aged 70 Years

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया ब्रिस्बेन की संख्या लगभग छह सौ है और एक बहुत मज़बूत और सक्रिय जमाअत क़ायम है तथा जमाअत का अपना दस एकड़ क्षेत्र पर बना हुआ विशाल सेंटर है और अभी हाल ही में बहुत सुंदर मस्जिद भी बनाई गई है।

25 अक्टूबर, शुक्रवार मुबारक 2013 ई.

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ सुबह चार बजे मस्जिद मसरूर में तशरीफ़ लाए और नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद मसरूर ब्रिस्बेन का मुबारक उद्घाटन

सुबह हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

आज शुक्रवार मुबारक का दिन था और आज का दिन ब्रिस्बेन की धरती पर असाधारण महत्व रखने वाला और इतिहास बनाने वाला दिन था। जमाअत ब्रिस्बेन की नई बनाई गई पहली और ऑस्ट्रेलिया की धरती पर बनाई गई दूसरी मस्जिद "मस्जिद मसरूर" का उद्घाटन हो रहा था। और फिर ब्रिस्बेन, स्टेट क्वींसलैंड से ख़लीफ़तुल मसीह का यह पहला ऐसा ख़ुत्बा-ए-जुमा था जो MTA इंटरनेशनल पर Live प्रसारित हो रहा था। इससे पहले ब्रिस्बेन से कभी भी MTA की Live प्रसारण नहीं हुई थी।

एक बजे हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला अपनी रिहाइशगाह से तशरीफ़ लाए और मस्जिद की बाहरी दीवार पर लगी हुई पट्टिका की नक़ाब-कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई।

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद में तशरीफ़ लाए और ख़ुत्बा-ए-जुमा इरशाद फ़रमाया।

ख़ुत्बा-ए-जुमा तशह्हुद, तअव्वुज़, तस्मिया और सूरह फ़ातिहा की तिलावत के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरह अल-आराफ़ की आयतें 30 और 32 की तिलावत की और उनका अनुवाद प्रस्तुत फ़रमाया।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से ब्रिस्बेन के अहमदियों को तौफ़ीक़ दी या ऑस्ट्रेलिया के अहमदियों को तौफ़ीक़ दी कि यहाँ इस शहर में बाक़ायदा मस्जिद का निर्माण करें। अतः अल्लाह तआला के इस एहसान का जितना भी शुक्र अदा करें, कम है। लगभग पंद्रह वर्ष पहले आपने यह जगह ख़रीदी थी। इस पर मिशन हाउस और एक हॉल भी बनाया, जिसमें आप नमाज़ें भी पढ़ते थे। फिर जब 2006 ई. में पहली बार मैं आया हूँ तो इन इमारतों के होने के बावजूद वह रौनक़ मुझे नहीं लगती थी जो अब बाक़ायदा मस्जिद बनने से दिखाई देती है। यह अल्लाह तआला का जमाअत पर एहसान है कि जमाअत और ख़िलाफ़त का एक ऐसा रिश्ता क़ायम किया है जो दुनिया में और कहीं दिखाई नहीं देता। यह वास्तव में उस शिक्षा और उस बैअत के वचन का परिणाम है, जिस पर क़ायम रहने की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को नसीहत फ़रमाई थी। इस प्रेम, भाईचारे और आज्ञापालन के रिश्ते को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी शर्तो-ए-बैअत में वर्णन फ़रमाया है और यही प्रेम, भाईचारे और आज्ञापालन का रिश्ता फिर आगे आपके

द्वारा जारी ख़िलाफ़त के निज़ाम के साथ भी जारी है। मस्जिदें हमारी ज़रूरत हैं और जैसे-जैसे जमाअत फैलती जाएगी, मस्जिदें भी इंशाअल्लाह तआला बनती चली जाएँगी और बन रही हैं। लेकिन यहाँ जो मैंने ख़िलाफ़त की बात की, यह इसलिए कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की आवाज़ पर लब्बैक कहने के कारण भी दुनिया में मस्जिदों का निर्माण हो रहा है। आम तौर पर दुनिया में हर जगह मैं जमाअतों को इस ओर ध्यान दिला रहा हूँ कि मस्जिदों का निर्माण करें क्योंकि यह तब्लीग़ का माध्यम हैं और वास्तव में यह बात सच भी साबित हो रही है। जैसा कि मैंने कहा कि 2006 ई. में जब मैं यहाँ आया था तो कहा था कि नमाज़ सेंटर अपनी जगह पर ठीक है लेकिन यहाँ बाक़ायदा मस्जिद की शक्ल में मस्जिद भी बनाई जानी चाहिए। तो जमाअत ने लब्बैक कहा और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मस्जिद का निर्माण कर दिया।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप लोगों को मस्जिद के निर्माण के संबंध में जिन विभिन्न रुकावटों से गुज़रना पड़ा, विभिन्न फेज़ (Phases) आए, उससे आपको स्वयं अंदाज़ा हो गया होगा कि स्थानीय लोगों के मन में मस्जिद की कल्पना कितनी अलग है। यहाँ सेंटर क़ायम था और लोग नमाज़ें पढ़ने के लिए आते थे। बाकी जमाअती Activities भी होती होंगी, लेकिन जब मस्जिद के लिए योजना मंज़ूरी के लिए दी गई तो पड़ोसियों की ओर से विरोध का सामना करना पड़ा। आख़िर अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया और जो मुझे रिपोर्ट मिली है उसके अनुसार आठ-नौ महीनों की कोशिशों के बाद काउंसिल की ओर से अनुमति मिल गई और इस तरह इस स्टेट "क्वींसलैंड" में जमाअत अहमदिया की बाक़ायदा पहली मस्जिद के निर्माण का आरंभ हुआ, जो दिसंबर 2012 ई. के बाद शुरू हुआ और आज आपके पास अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह सुंदर मस्जिद है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस मस्जिद के निर्माण और पहली इमारतों की मरम्मत आदि पर जो आँकड़े मेरे पास आए हैं, उनके अनुसार साढ़े चार मिलियन डॉलर खर्च किए गए और जमाअत के लोगों ने दिल खोलकर क़ुर्बानियाँ दीं। मुझे बताया गया है कि एक मित्र ने एक लाख पच्चीस हज़ार डॉलर दिए। एक ने एक लाख डॉलर दिए और हर एक ने अपनी क्षमता के अनुसार क़ुर्बानियाँ दीं। बल्कि शायद इससे बढ़कर क़ुर्बानियाँ दीं। महिलाओं ने, जैसा कि जमाअत अहमदिया की महिलाओं की परंपरा है, यहाँ भी अपने आभूषण मस्जिद के लिए पेश किए। अल्लाह तआला इन सभी क़ुर्बानी करने वालों को बहुत अधिक प्रदान करे। उनके धन और प्राणों में बरकत डाले। लेकिन हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि यह क़ुर्बानी, यह प्रेम और निष्ठा की भावना, यह आज्ञापालन के नमूने किसी अहमदी के अंदर किसी थोड़े समय के जोश के कारण नहीं होने चाहिए, बल्कि हमेशा जारी रहने वाले नमूने और जज़्बे होने चाहिए।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: शुरू में जो आयतें मैंने तिलावत की हैं, वे सूरह आराफ़ की आयतें 30 और 32 हैं और मस्जिद से संबंधित हैं। इनमें अल्लाह तआला ने एक मोमिन से कुछ उम्मीदें रखी हैं, बल्कि मोमिनों को नसीहत की है कि मस्जिद से जुड़े रहने वाले और सच्चे इबादत करने वाले इन बातों का ध्यान रखेंगे तो अल्लाह तआला की प्यार भरी नज़र उन पर पड़ेगी।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पहली बात यह कि अल्लाह तआला ने न्याय का आदेश दिया है और न्याय केवल सामाजिक मामलों में और लोगों के साथ ही नहीं, बल्कि अल्लाह तआला के आदेशों का हक़ अदा करना भी न्याय की आवश्यकताओं को पूरा करने की माँग करता है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मख़लूक़ के जो अधिकार हैं, उनमें उदाहरण के रूप में पति को आदेश है कि पत्नियों के अधिकार अदा करो। उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखो। उनसे नरमी और प्रेम से पेश आओ। उनके रिश्तेदारों का ध्यान रखो। पत्नी के माता-पिता और भाई-बहन तथा दूसरे रिश्तेदारों का सम्मान करो। पत्नियों के माल और उनकी कमाई पर नज़र न रखो। बच्चों के अधिकार अदा करो। उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण की ओर ध्यान दो। अपने आदर्श नमूने दिखाओ ताकि वे धर्म के महत्व को समझें और धर्म से जुड़े रहें। हमेशा याद रखें कि लड़के, विशेष रूप से जब तेरह-चौदह वर्ष के हो जाते हैं, तो आम तौर पर धर्म का सम्मान उस समय करते हैं जब वे देखते हैं कि उनका पिता भी धर्म का सम्मान करने वाला है, अपनी इबादतों की हिफ़ाज़त करने वाला है, नमाज़ों का पाबंद है और क़ुरआन करीम की तिलावत करने का पाबंद है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह हर महिला, हर पत्नी को भी अपनी ज़िम्मेदारी अदा करने के लिए न्याय करना होगा। अपने घर के कर्तव्य अदा करें। महिला की सबसे पहली ज़िम्मेदारी घर की ज़िम्मेदारी है, उसे संभालना है। अपनी ज़िम्मेदारियों को समझें। पति के सम्मान के साथ उसके रिश्तेदारों का भी सम्मान करें। बच्चों की परवरिश और निगरानी करें। इस माहौल में विशेष रूप से बच्चों की परवरिश के बारे में माता-पिता को बहुत चिंता होनी चाहिए और ध्यान देने की ज़रूरत है और यह धार्मिक प्रशिक्षण माता और पिता दोनों का काम है। बच्चों को यह विश्वास दिलाने की ज़रूरत है कि तुम अहमदी मुसलमान हो और इसके लिए सबसे पहले अपने आपको अहमदी मुसलमान साबित करना होगा। यह विश्वास दिलाने की ज़रूरत है कि तुम्हारी क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं? सबसे पहले माता-पिता को अपनी ज़िम्मेदारियों को समझना होगा। बच्चों को यह बताना होगा कि तुममें और दूसरों में एक अंतर होना चाहिए। जब बच्चों की इस ढंग से परवरिश होगी, तभी बच्चे धर्म से जुड़े रहेंगे।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: फिर समाज के सामान्य संबंध हैं। यहाँ भी हर पुरुष और महिला जो अपने आपको मोमिनों में शामिल करता है या करवाना चाहता है, उसका यह कर्तव्य है कि एक-दूसरे का अधिकार अदा करने की कोशिश करें। व्यापारिक मामले हों या किसी भी प्रकार के मामले हों, उनमें न्याय और इंसाफ़ की आवश्यकताओं को पूरा करना ज़रूरी है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस मस्जिद के बनने से यहाँ रहने वाले अहमदियों की ज़िम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं और वे यह हैं कि उन्होंने इस मस्जिद को आबाद भी करना है और इस मस्जिद में जो ख़ुदा तआला की नज़र में ज़ीनत है, उस ज़ीनत को लेकर आना है। यह भी आपकी ज़िम्मेदारी है और एक-दूसरे के अधिकार भी अदा करने हैं। यह भी आपकी ज़िम्मेदारी है और क्षेत्र में सच्चे इस्लाम का संदेश भी पहुँचाना है। यह भी आपकी ज़िम्मेदारी है। यदि आप ये अधिकार अदा करते रहेंगे तो निश्चित रूप से आपकी मस्जिद के निर्माण के लिए की गई आर्थिक क़ुर्बानियाँ और समय की क़ुर्बानियाँ अल्लाह तआला के यहाँ स्वीकार होंगी और अल्लाह करे कि ऐसा ही हो और अल्लाह तआला के प्यार भरी नज़र के नज़ारे आप देखने वाले हों।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हमेशा याद रखना चाहिए कि हर काम संतुलन के साथ हो तो अल्लाह तआला को पसंद है। दुनिया कमाने से ख़ुदा तआला ने नहीं रोका, बल्कि इस बात की ओर ध्यान दिलाया है कि मोमिनों को अपने काम करने चाहिए और पूरी तवज्जो से करने चाहिए और वहाँ भी न्याय करना चाहिए। लेकिन अगर दुनिया कमाना धर्म को भुलाने का कारण बन जाए, नमाज़ों की ओर से ध्यान हटाने का कारण बन जाए तो फिर यह बात इंसान को अल्लाह तआला के फ़ज़लों से वंचित कर देती है। ख़ुदा तआला हममें से हर एक को ऐसे अपव्यय से बचाए जो ख़ुदा तआला से दूर करे।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह अल्लाह तआला का एहसान है कि जमाअत की अधिकतर संख्या इन ज़िम्मेदारियों को समझने वाली है और जैसा कि मैंने आर्थिक क़ुर्बानी में बताया था, बढ़-चढ़कर क़ुर्बानी करने वाली है और आर्थिक क़ुर्बानी की भावना को समझने वाली है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह मस्जिद जो आपने बनाई है, जैसा कि मैंने कहा, बहुत सुंदर है। बाहर मीनार भी है, गुम्बद भी है, जो बहुत सुंदर लगते हैं। मस्जिद का छत वाला हिस्सा (Covered Area) भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से काफ़ी बड़ा है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेरी दुआ है कि यह संख्या बढ़े और स्थानीय लोगों से यह मस्जिद भर जाए और छोटी पड़ जाए। लेकिन हमारी वास्तविक खुशी उस समय होगी जब पाकिस्तान से आने वाले अहमदियों से नहीं, बल्कि स्थानीय निवासियों से यह मस्जिद भरे और नमाज़ियों की संख्या में वृद्धि हो। लेकिन यह इच्छा और यह काम तब्लीग़ के बिना पूरा नहीं हो सकता। अतः तब्लीग़ की कोशिश और इसके लिए दुआ को बढ़ाएँ। कोशिश भी बढ़नी चाहिए और दुआ की ओर ध्यान भी होना चाहिए। अल्लाह तआला करे कि यह मस्जिद जल्दी छोटी पड़ जाए और और अधिक मस्जिदें बनती चली जाएँ। यह मस्जिद इस क्षेत्र में आपकी अंतिम मंज़िल नहीं है, बल्कि यह पहला कदम है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया है कि मस्जिद से इस्लाम का परिचय होता है और लोगों का इस्लाम की ओर ध्यान पैदा होता है। अल्लाह तआला करे कि स्थानीय लोगों में जल्द से जल्द इस ओर ध्यान पैदा हो और इंशाअल्लाह तआला उम्मीद है कि होगा। दुनिया में जहाँ भी हमारी मस्जिदें बनी हैं, इस्लाम का परिचय कई गुना बढ़ा है। अतः इस दृष्टि से पहले भी मैं कह चुका हूँ कि अपनी ज़िम्मेदारी को समझें कि इस परिचय के कारण आसपास के लोगों की नज़र आप पर पहले से अधिक गहरी पड़ेगी। आप पाकिस्तान से इसलिए आए हैं कि वहाँ आज़ादी से मस्जिदों में इबादत नहीं कर सकते थे, आज़ादी से अपने आपको मुसलमान नहीं कह सकते और अहमदी मुसलमान होने का इज़हार नहीं कर सकते थे।

ख़ुत्बे के अंत में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पाकिस्तान में जमाअत की मुख़ालफ़त और अहमदियों पर मुक़दमों का उल्लेख करते हुए फ़रमाया: इन हालात को भूल न जाएँ। याद रखें और अपनी मस्जिदों के अधिकार अदा करें। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन।

हज़ूर-ए-अनवर का ख़ुत्बा-ए-जुमा दो बजे तक जारी रहा।

(ख़ुत्बा-ए-जुमा का पूरा पाठ, साप्ताहिक अलफ़ज़ल इंटरनेशनल के 15 नवंबर 2013 ई. के अंक में प्रकाशित हो चुका है।)

★ ★ ★

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 10-17 September 2026 Issue No. 37-38

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

{101} बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे मियाँ अब्दुल्लाह साहब सनौरी ने बयान किया कि जब मैं 1882 ई. में पहली बार क़ादियान आया तो उस समय मेरी उम्र सत्रह-अठारह वर्ष की थी और मेरी एक शादी हो चुकी थी और दूसरी का विचार था, जिसके संबंध में मैंने कुछ सपने भी देखे थे। मैंने एक दिन हज़रत साहब के साथ इसका उल्लेख किया कि मुझे ऐसे-ऐसे सपने आए हैं। हज़रत साहब ने फ़रमाया, ये तुम्हारी दूसरी शादी के संबंध में हैं और फ़रमाया कि मुझे भी अपनी दूसरी शादी के संबंध में इल्हाम हुए हैं। देखो, तुम्हारी शादी पहले होती है या हमारी। मैंने अदब के रूप में निवेदन किया कि हज़ूर ही की पहले होगी।

फिर इसके बाद मुझे अपने एक रिश्ते के मामा मुहम्मद इस्माईल की लड़की के साथ निकाह का विचार हो गया। अतः मैं क़ादियान आकर हज़रत साहब के साथ इसका उल्लेख किया। इससे पहले मेरे साथ उक्त इस्माईल भी एक बार क़ादियान आ गया था। हज़ूर ने मुझसे फ़रमाया, तुमने उस समय मुझसे इसका उल्लेख क्यों न किया जब इस्माईल यहाँ आया था? हम उसे यहीं प्रेरित करते।

फिर आपने मेरे मामा मुहम्मद यूसुफ़ साहब मरहूम को, जो हज़रत साहब के बड़े मानने वाले थे और जिनके द्वारा मुझे हज़रत साहब की ओर मार्गदर्शन मिला था, पत्र लिखा और उसमें इस्माईल के नाम भी एक पत्र डाल दिया और लिखा कि इस्माईल के नाम का पत्र उसके पास ले जाएँ और उसे प्रेरित करें। और इस पत्र में मेरे पिता और दादा और ससुर की ओर भी हज़ूर ने पत्र डालकर भेजे और इन सभी पत्रों को महत्वपूर्ण बनाने के लिए उन पर اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ वाली मुहर लगाई और मेरे पिता और दादा और ससुर के पत्र में लिखा कि मियाँ अब्दुल्लाह धार्मिक उद्देश्य से दूसरी शादी करना चाहते हैं, उन्हें न रोकें और उन पर राज़ी रहें।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब कहते हैं कि हज़रत साहब ने ऐसा इसलिए लिखा था कि मैंने हज़ूर से कहा था कि मैंने अपने पिता और दादा से इस मामले के संबंध में खुलकर बात नहीं की, मुझे डर है कि वे कहीं इसमें रुकावट न डालें, क्योंकि उस समय दूसरी शादी को बुरा समझा जाता था।

हज़रत साहब ने इधर ये पत्र लिखे और उधर मेरे लिए दुआ शुरू फ़रमाई। अभी मेरे मामा मुहम्मद यूसुफ़ साहब का जवाब नहीं आया था और हज़रत साहब मेरी प्रेरणा पर इस मामले के लिए दुआ में व्यस्त थे कि ठीक दुआ करते-करते हज़रत साहब को इल्हाम हुआ "नाकामी"। फिर दुआ की तो इल्हाम हुआ "ऐ बस आरज़ू कि ख़ाक शुदा"। फिर इसके बाद एक और इल्हाम हुआ "فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ"।

हज़रत साहब ने मुझे ये इल्हाम बता दिए। उन दिनों मीर अब्बास अली भी यहाँ आए हुए थे। उनसे हज़रत साहब ने इन इल्हामों का उल्लेख करते हुए फ़रमाया कि पता नहीं मियाँ अब्दुल्लाह साहब का हमारे साथ कैसा संबंध है कि इधर मैं दुआ करता हूँ और उधर अल्लाह तआला की ओर से जवाब मिल जाता है।

कुछ दिनों के बाद मियाँ मुहम्मद यूसुफ़ साहब का जवाब आ गया कि मियाँ अब्दुल्लाह के पिता और दादा और ससुर तो राज़ी हो गए हैं, लेकिन इस्माईल इनकार करता है। इस पर हज़रत ने फ़रमाया कि अब हम इस्माईल को स्वयं कहेंगे।

मैंने निवेदन किया कि हज़ूर, इधर अल्लाह तआला की ओर से नाकामी का इल्हाम हुआ है, उधर इस्माईल इनकार कर रहा है। अब इस मामले में सफलता की कोई सूरत कैसे हो सकती है?

फ़रमाया, नहीं। क़ुरआन शरीफ़ में है:

كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَأْنٍ (الرحمن:30)

अर्थात हर दिन अल्लाह तआला अलग शान में होता है। इसलिए कोशिश नहीं छोड़नी चाहिए। संभव है कि अल्लाह तआला के इल्हामों का यह मतलब हो कि जिस तरीके से कोशिश की गई है, उसमें नाकामी है और किसी दूसरे तरीके से सफलता तय हो।

अतः इसके बाद भी मेरा लगातार उसकी ओर ध्यान रहा और मैं हज़ूर से दुआएँ भी करवाता रहा। इस्माईल उन दिनों सरहिंद के पास पटवारी था और सरहिंद में हशमत अली ख़ान साहब तहसीलदार थे, जो डॉक्टर अब्दुल हकीम ख़ान के क़रीबी रिश्तेदार थे। उन्होंने हज़रत साहब से वादा लिया हुआ था कि कभी हज़ूर सरहिंद तशरीफ़ ले चलेंगे।

अतः जब आप अंबाला जाने लगे तो मुझे कहा कि हशमत अली ख़ाँ साहब को लिख दो कि हम अंबाला जाते हुए सरहिंद आएँगे और मुझे हज़रत साहब ने फ़रमाया कि सरहिंद में मुजद्दिद साहब के रोज़े पर भी हो आएँगे और इस्माईल से भी तुम्हारे संबंध में बात करने का अवसर मिल जाएगा।

अतः आप वहाँ गए और तहसील में हशमत अली ख़ाँ साहब के पास ठहरे। रात को जब नमाज़ और खाने से फ़ारिग़ हो चुके तो हज़ूर चारपाई पर लेट गए और हशमत अली ख़ाँ साहब से फ़रमाया, तहसीलदार साहब, अब आप आराम करें। हमें मियाँ इस्माईल से कुछ अलग होकर बात करनी है। इस पर वे और उनके साथी उठ गए और मैं भी उठ आया।

उस समय इस्माईल हज़रत साहब के पैर दबा रहा था। फिर हज़रत साहब ने इस्माईल से मेरे संबंध में कहा, लेकिन उसने इनकार किया और कई बहाने किए कि दो बीवियों में झगड़े होते रहते हैं। इसके अलावा यह कि अब्दुल्लाह की तनख़्वाह बहुत कम है (उस समय मेरी तनख़्वाह साढ़े चार रुपये मासिक थी), गुज़ारा किस तरह होगा और मियाँ अब्दुल्लाह के ससुर मेरे क़रीबी हैं, उन्हें दुख होगा आदि।

हज़रत साहब ने फ़रमाया, इन सब बातों की ज़िम्मेदारी मैं लेता हूँ, लेकिन उसने फिर भी नहीं माना और बहाना किया कि मेरी पत्नी नहीं मानेगी।

हज़रत साहब फ़रमाते थे कि मैंने ख़ुदा और उसके रसूल का आदेश पेश किया और अपनी ओर से भी कहा, लेकिन उसने इनकार किया। मानो उसका ख़ुदा, उसका रसूल और उसका पीर, सब उसकी पत्नी ही है, क्योंकि वह कहता था कि मैं तो वही करूँगा जो वह कहेगी।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब कहते थे कि हज़रत साहब फ़रमाते थे कि अभी मैंने इस्माईल से बात शुरू नहीं की थी कि मुझे कश्फ़ हुआ कि उसने मेरे बाएँ हाथ पर हाथ फेर दिया है। इसके अलावा मैंने कश्फ़ में देखा था कि उसकी शहादत की उँगली कटी हुई है। इस पर मैं समझ गया था कि यह इस मामले में मुझे बहुत गंदा जवाब देगा।

हज़रत साहब फ़रमाते थे कि उसका जवाब सुनकर मुझे उससे ऐसी नफ़रत हुई कि दिल चाहता था कि यह अभी उठ जाए और फिर जीवन भर मेरे सामने न आए।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब कहते हैं कि इसके बाद इस्माईल ने अपनी लड़की की दूसरी जगह शादी कर दी, जिससे मुझे बहुत दुख पहुँचा। मेरी इस हालत की मेरे पिता साहब ने हज़रत साहब को पत्र द्वारा सूचना दी तो आपने मुझे पत्र लिखा कि तुम कुछ समय के लिए विचार बदलने के लिए यहाँ मेरे पास आ जाओ।

लेकिन इस शादी के बाद इस्माईल पर बड़ी मुसीबत आई। उसके दो जवान लड़के और पत्नी का देहांत हो गया। फिर जब मेरी दूसरी शादी मास्टर क़ादिर बख़्श साहब की बहन के साथ हुई तो इस्माईल को बहुत पछतावा हुआ और उसने मुझे कहा कि हज़रत से मुझे माफ़ी दिलवा दो।

मैंने हज़रत साहब को लिखा। हज़ूर ने उसकी बैअत स्वीकार फ़रमा ली, लेकिन इसके बाद भी इस्माईल को हज़रत साहब की मुलाक़ात का सौभाग्य नहीं मिला।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब कहते थे कि मेरे संबंध में जो हज़रत साहब ने अपने निशानों के उल्लेख में लिखा है कि मुझे दिखाया गया था कि मियाँ अब्दुल्लाह को एक मामले में नाकामी होगी, तो ऐसा ही हुआ। वह इसी घटना की ओर संकेत है।

ख़ाकसार निवेदन करता है कि हज़ूर ने अपनी पुस्तक हक़ीक़तुल वह्यी, निशान नंबर 55 में मियाँ अब्दुल्लाह साहब की इस नाकामी की ओर संकेत किया है।

मियाँ अब्दुल्लाह साहब बयान करते हैं कि जब मेरे मामा इस्माईल की लड़की का निकाह दूसरी जगह हो गया तो मैंने एक और जगह प्रस्ताव रखा और सभी बातों का निपटारा करके हज़रत साहब को पत्र लिखा कि मैंने एक जगह शादी का प्रस्ताव तय कर लिया है और सभी बातों का फ़ैसला हो चुका है और निकाह की तारीख़ भी तय हो चुकी है। अब हज़ूर से बरकत के रूप में सलाह पूछता हूँ।

हज़रत साहब ने उत्तर दिया कि इस मामले में जल्दी न करो। बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए और ताकीद फ़रमाई कि ज़रूर पहले लड़की को देख लो। पत्र समाप्त करने के बाद फिर लिखा कि मेरी इस बात को अच्छी तरह याद रखना।

अतः मैं आदेश के अनुसार लड़की को देखने के लिए उसके गाँव गया तो देखते ही मेरे दिल में इतनी घृणा पैदा हुई कि क़रीब था कि उल्टी हो जाती, हालाँकि लड़की शक्ल-सूरत में खराब नहीं थी।

इसके बाद लुधियाना की एक अध्यापिका के साथ प्रस्ताव हुआ, लेकिन हज़रत साहब ने उसे भी पसंद नहीं फ़रमाया। इसके बाद मैंने मास्टर क़ादिर बख़्श साहब की बहन

शेष पृष्ठ 5 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad